बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

जुलाई–सितंबर, 2022 अंक

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

बैंक को राजभाषा का सर्वोच्च पुरस्कार 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'

बैंक को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की श्रेणी में वर्ष 2021–22 में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार के सर्वोच्च पुरस्कार 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' के तहत प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. बैंक की ओर से यह पुरस्कार दिनांक 14 सितंबर, 2022 को सूरत में आयोजित हिंदी दिवस समारोह–2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह की गरिमामयी उपस्थिति में कार्यपालक निदेशक श्री अजय के खुराना ने ग्रहण किया. इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात सरकार श्री भूपेन्द्र भाई पटेल, राज्यसभा के उप सभापति श्री हरिवंश, केंद्रीय गृह राज्यमंत्रीगण श्री अजय कुमार मिश्रा एवं श्री निशिथ प्रामाणिक तथा संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब विशेष रूप से उपस्थित थे.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा को 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की श्रेणी में वर्ष 2021–22 के लिए भारत सरकार के सर्वोच्च राजभाषा पुरस्कार 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' के अंतर्गत 'ख' भाषिक क्षेत्र में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. दिनांक 14 सितंबर, 2022 को सूरत में आयोजित हिंदी दिवस समारोह–2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में राज्यसभा के उप सभापति श्री हरिवंश के कर कमलों से यह पुरस्कार समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री दिनेश पंत ने ग्रहण किया. इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात सरकार श्री भूपेन्द्र भाई पटेल, केंद्रीय गृह राज्यमंत्रीगण श्री अजय कुमार मिश्रा एवं श्री निशिथ प्रामाणिक तथा संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब विशेष रूप से उपस्थित थे.

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है.

हमने 20 जुलाई, 2022 को बैंक का 115वां स्थापना दिवस मनाया जिसका घोष वाक्य 'उन्नत तकनीक, समृद्ध जीवन' था. यह संकल्पना अत्याधुनिक तकनीक आधारित बैंकिंग सुविधाओं के आधार पर ग्राहकों के समृद्ध जीवन के निर्माण का लक्ष्य रखती है. इस अवसर पर हमारे सभी कार्यालयों/शाखाओं ने अपने कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्वों के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ प्रभात रैली, वृक्षारोपण, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि का आयोजन किया. खुशी तब और बढ़ जाती है जब हमें अपने कार्यों के सुखद परिणाम देखने को मिलते हैं. हमारे बैंक को ईज़-4.0 रिफॉर्म इंडेक्स में 'समग्र रूप से श्रेष्ठ प्रदर्शनकर्ता बैंक' के रूप में सम्मानित किया गया है. साथ ही, बैंक को हिंदी प्रयोग के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य हेतु वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए भारत सरकार की सर्वोच्च पुरस्कार योजना 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है. इन दोनों पुरस्कारों से बैंक के विकासात्मक दृष्टिकोण अर्थात् बैंकिंग की दृष्टि से अत्याधुनिक तकनीक एवं शैली को अपनाते हुए देश के आमजनों को श्रेष्ठ बैंकिंग सेवाएं देने की प्रतिबद्धता का पता चलता है. ये पुरस्कार हमारे कार्यों के पारितोषिक होने के साथ-साथ हमारे भावी कार्यों के प्रेरणास्रोत रहेंगे.

भारत की मौजूदा अर्थव्यवस्था को विश्व आशापूर्ण दृष्टि से देख रहा है. भारत हमेशा से विश्व के लिए एक दृष्टांत के रूप में रहा है. 1 नवंबर, 2022 से भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा होलसेल सेगमेंट हेतु डिजिटल करेंसी की शुरुआत की गई है. यह अर्थव्यवस्था के इतिहास में एक क्रांतिकारी कदम है. इस पायलट परियोजना के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा चुने गए 3 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में हमारे बैंक का शामिल होना हमारी मजबूत डिजिटल उपस्थिति और सामर्थ्य को दर्शाता है, जिसके परिणामस्वरूप हमें एक महत्वाकांक्षी परियोजना से जुड़ने का गौरवशाली अवसर प्राप्त हुआ है. बीते दिनों में हमने अपनी रूपांतरण यात्रा में अपने डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को और सुदृढ़ किया है.

बैंक लगातार बदलती अर्थव्यवस्था पर नज़र बनाए हुए है. अर्थव्यवस्था विकास की ओर अग्रसर है और तदनुसार बैंक नए परिवर्तनों को आत्मसात कर रहा है. अर्थव्यवस्था के संदर्भ में भारतीय बैंक विकास वित्तीय संस्थान (डीएफआई) की भूमिका निभा रहे हैं. बैंक न केवल पूंजी उपलब्ध करवा रहे हैं बल्कि बहुत सारी परियोजनाओं को वित्तपोषित कर रहे हैं. भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रत्येक पहलू चाहे वह उद्योग हो, एमएसएमई निर्यात सेक्टर हो या बढ़ते हुए उपभोक्ता वित्तपोषण, बैंक इनके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं.

समय एवं ग्राहकों की आवश्यकता के अनुरूप बैंक अपने स्वरूप एवं उत्पादों में लगातार संवर्धन कर रहा है. मिड कॉर्पोरेट सेगमेंट में मौजूद संभावनाओं को देखते हुए बैंक ने देश भर में चार केंद्रों यथा मुंबई, नई दिल्ली, चेन्नै एवं कोलकाता में मिड कॉर्पोरेट क्लस्टर कार्यालयों का शुभारंभ किया है. हमारा लक्ष्य मिड कॉर्पोरेट ऋण बही में गुणवत्तापूर्ण ऋण में निरंतर वृद्धि करना है. ये शाखाएं ऋण संबंधी निर्णय लेने की प्रक्रिया में टर्नअराउंड समय को कम करेंगी. भविष्य की बैंकिंग डिजिटल बैंकिंग ही है. अत: भारत सरकार ने इस अवधारणा को ध्यान में रखते हुए देश के 75 जिलों में डिजिटल बैंकिंग यूनिट का शुभारंभ किया है. यह उल्लेखनीय है कि इनमें 8 केंद्रों पर डिजिटल बैंकिंग यूनिट की जिम्मेदारी हमारे बैंक को सौंपी गई है जिसका निर्वाह बैंक पूरी सक्षमता के साथ कर रहा है.

तकनीक ने भारत में बैंकिंग के स्वरूप को बदल दिया है. एकाउंट एग्रीगेटर इकोसिस्टम करोड़ों भारतीयों को ऋण देने और निवेश विकल्प उपलब्ध करवाने के क्षेत्र में बड़े परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है. हमारा बैंक वित्तीय जानकारी उपयोगकर्ता (एफआईयू) के रूप में इस प्लेटफॉर्म पर सक्रिय रूप से काम कर रहा है और इसके माध्यम से डिजिटल लेंडिंग को बढ़ावा दे रहा है. वैश्विक स्वास्थ्य संकट के कारण दो वर्षों के कठिन दौर से गुजरने के बाद त्योहारों के इस मौसम में हम अपने विभिन्न उत्पादों की मांग में बढ़ोत्तरी हेतु आशान्वित हैं. हमने 'खुशियों का त्योहार' नामक वार्षिक त्योहारी अभियान का शुभारंभ किया है. पेंशनरों को जीवन प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने में सुविधा हो सके इस उद्देश्य से वीडियो कॉलिंग के माध्यम से जीवन प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने की सुविधा शुरू की गई है. ग्राहकों को पसंदीदा भाषा में बैंकिंग सेवाएं प्राप्त हो सके इस उद्देश्य से बॉब वर्ल्ड, इंटरनेट बैंकिंग और व्हाट्सऐप बैंकिंग सुविधा को हिंदी में भी उपलब्ध करवा दिया गया है और अन्य इंटरफेस में भी हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की उपलब्धता हेतु कार्य जारी है. बैंक ने अपने ग्राहकों के लिए 'बॉब वर्ल्ड बेनीफिट्स' नामक ग्राहक जुड़ाव कार्यक्रम की शुरुआत की है जिसके तहत ग्राहक हमारे मोबाइल बैंकिंग ऐप 'बॉब वर्ल्ड' के माध्यम से लेन-देन करके रिवार्ड पॉइंट अर्जित कर सकते हैं. ये सारी पहलें हमारे ग्राहकों को बैंकिंग का अत्यंत सुखद अहसास प्रदान करने के लिए की जा रही हैं ताकि उनके साथ हमारे जुड़ाव में और मजबूती और गहराई आए.

परिवर्तन की यात्रा हो या उनसे मिलने वाले अच्छे परिणाम, इन सबके पीछे हम सभी के सामूहिक प्रयास होते हैं. हमारे सभी बड़ौदियन साथी हर स्तर पर अच्छा कार्य कर रहे हैं इसलिए बैंक भी अपनी नई पहलों को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने में सफल रहा है. मुझे विश्वास है कि आप सभी भविष्य में भी इसी प्रकार अपनी मातृ संस्था की प्रगति यात्रा में अपना योगदान देते रहेंगे.

आने वाले त्योहारों की हार्दिक शुभकामनाएं.

संजीव चड्ढा

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के माध्यम के रूप में बैंक की पत्रिका **अक्षय्यम्** के जरिए आप सभी के समक्ष अपने विचारों को रखना मेरे लिए सदैव प्रसन्नता का अवसर होता है. यह पत्रिका हमारी नवोन्मेषी पहलों की प्रस्तुति के साथ ही स्टाफ सदस्यों की सृजनशीलता को भी उद्घाटित करती है और भाषायी ज्ञानार्जन के साधन-संसाधन उपलब्ध कराती है.

सामान्यतः सितंबर का महीना हम सभी के लिए विशेष महत्त्व रखता है. एक तरफ जहां यह त्योहारों के मौसम के आगमन की पृष्ठभूमि तैयार करता है, वहीं दूसरी तरफ राजभाषा हिंदी की ऐतिहासिक यात्रा की शुरुआत को भी याद दिलाता है. इस वर्ष यह माह हमारे बैंक के लिए इसलिए भी अधिक महत्वपूर्ण रहा कि 14 सितंबर को सूरत में आयोजित हिंदी दिवस समारोह एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान हमारे बैंक को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के तहत वर्ष 2021-2022 हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया जिसे आप सभी की ओर से मुझे ग्रहण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ. वास्तव में यह पुरस्कार आप सभी के हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति सहृदयता और इसके प्रयोग की दिशा में नवाचार को परिलक्षित करता है. इस उपलब्धि पर आप सभी को ढेर सारी बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं.

किसी भी क्षेत्र में नवाचार का प्रयोग उस क्षेत्र विशेष के विकास पथ को सुदृढ़ करता है. यह भाषा के साथ-साथ बैंकिंग सेवाओं के लिए भी उतना ही प्रासंगिक है. आज हमारा बैंक हर क्षेत्र में नये-नये प्रयास कर रहा है, जो एक बेहतर कल की परिकल्पना को साकार करता है. हाल ही में वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा देश में वित्तीय समावेशन फ्रेमवर्क को और अधिक व्यापक बनाने हेतु अभियान चलाया गया है जिसमें अग्रणी बैंक के रूप में हम अपना सर्वोत्तम योगदान दे रहे हैं.

राष्ट्र सेवा में एक नई पहल के अंतर्गत हमने भारत सरकार की 'अग्निपथ योजना' के तहत भर्ती किए गए अग्निवीरों के लिए 'बड़ौदा मिलिट्री सैलरी पैकेज' के संबंध में भारतीय सेना और पूर्व सैनिकों को पेंशन भुगतान से संबंधित स्पर्श पहल के तहत रक्षा पेंशन को लेकर भारत सरकार के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं. इसमें बैंक की 7900 से अधिक शाखाएं ऑनबोर्ड होंगी. निश्चित रूप से हमें इसका व्यावसायिक दृष्टि से काफी लाभ मिलने वाला है.

वित्तीय वर्ष 2022-23 के छमाही वित्तीय परिणाम बैंक के लिए सकारात्मक रहे हैं. बैंक ने वर्ष की दूसरी तिमाही में रू. 3,313 करोड़ का रिकॉर्ड मुनाफा दर्ज किया है. वर्ष की पहली छमाही में बैंक ने निवल लाभ में वर्ष-दर-वर्ष के आधार पर 66.3% की मजबूत वृद्धि दर्ज की है. इसके साथ ही बैंक का निवल ब्याज मार्जिन (NIM) वर्ष-दर-वर्ष के आधार पर 48 बीपीएस की वृद्धि के साथ 3.33% रहा. बैंक की ये उपलब्धियां आप सभी के सामूहिक प्रयासों का ही परिणाम हैं और हम भविष्य में और भी बेहतर करने की राह में आगे बढ़ रहे हैं. हम सभी की कोशिश होनी चाहिए कि वित्त वर्ष 2022-23 में बैंक के वार्षिक वित्तीय परिणाम इतने शानदार हों कि इसे बैंक के इतिहास में हमेशा याद रखा जाए.

भारतीय अर्थव्यवस्था के पटरी पर वापसी के साथ ही अर्ध-शहरी और ग्रामीण बाज़ारों में मांग और सेवाओं में लगातार वृद्धि हो रही है, जिससे बैंक के खुदरा ऋण व्यवसाय की संभावनाएं भी बढ़ रही हैं. उपभोक्ता व्यय में होने वाली यह वृद्धि आगे भी जारी रहने की उम्मीद है. तदनुसार, हमें खुदरा ऋण पोर्टफोलियो को बढ़ाने एवं इस क्षेत्र में अपनी बाजार हिस्सेदारी को विस्तारित करने की आवश्यकता है. एमएसएमई क्षेत्र में भी कोविड के पश्चात संभावनाओं के द्वार खुले हैं जिसका हमें अधिक से अधिक लाभ उठाना है. इसके लिए शाखा प्रमुख और शाखा की टीम को व्यवसाय संग्रहण के लिए योजनाबद्ध तरीके से शाखा से बाहर निकलकर सक्रिय प्रयास करने की आवश्यकता है.

आइए, हम सभी त्योहारों के मौसम का लाभ उठाएं और व्यवसाय को बढ़ाने में अपना योगदान दें. मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि सभी स्तरों से किए जा रहे प्रयासों के फलस्वरूप हम अपने बैंकिंग व्यवसाय को नई दिशा देते हुए इसे सशक्त आधार प्रदान करने में सफल होंगे.

शुभकामनाओं सहित,

अजय खुराना

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी तिमाही पत्रिका '**अक्षय्यम्**' के नवीनतम अंक **जुलाई-सितंबर, 2022** के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए हर्ष की बात है. वर्तमान तिमाही बैंकिंग उपलब्धियों के साथ-साथ राजभाषा विषयक गतिविधियों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रही जिसमें बैंक को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भारत सरकार के सर्वोच्च पुरस्कार **''राजभाषा कीर्ति''** पुरस्कार 2021-22 के अंतर्गत **''प्रथम पुरस्कार''** की प्राप्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है. यह पुरस्कार दिनांक 14 सितंबर, 2022 को सूरत में हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं हिंदी दिवस समारोह में बैंक को प्रदान किया गया. इस उपलब्धि हेतु सभी बड़ौदियन बधाई के पात्र हैं.

आप इस बात से सहमत होंगे कि वर्तमान समय में जहां एक ओर बैंकिंग संस्थान डिजिटल माध्यमों से ग्राहकों तक पहुंच बनाने की दिशा में अग्रसर हैं वहीं दूसरी ओर बैंकिंग सेवाओं को लेकर ग्राहक की अपेक्षाएं भी बढ़ी हैं. अब ग्राहक कम समय में अपनी जमा राशि पर अधिकतम प्रतिफल प्राप्त करने हेतु इसे उपयुक्त माध्यमों में निवेश करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं. तात्पर्य यह है कि बचत राशि के निवेश की पारंपरिक पद्धति में बदलाव हुआ है. अतः हमें अपने ग्राहक की अपेक्षाओं के अनुरूप उनके धन के इष्टतम उपयोग की दृष्टि से उत्पाद की पेशकश करने की आवश्यकता है. इस उद्देश्य हेतु धन संपदा प्रबंधन की उपयोगिता अत्यंत महत्वपूर्ण है. बैंक द्वारा धन संपदा प्रबंधन को सुदृढ़ और सशक्त बनाने की दिशा में लगातार सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं. आवश्यकता है कि शाखाओं/कार्यालयों के स्तर पर सघन कार्रवाई के द्वारा इन प्रयासों को बल दिया जाए. ब्याज इतर आय बढ़ाने की दृष्टि से यह काफी महत्वपूर्ण है.

वर्तमान समय में बैंकिंग उद्योग में नकदी प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है. सुव्यवस्थित और सुनियोजित नकदी प्रबंधन के माध्यम से बैंक को आय अर्जन का सुअवसर प्राप्त होता है. नकदी प्रबंधन के महत्व को देखते हुए बैंक द्वारा बड़ौदा डिजीनेक्स्ट के माध्यम से नकदी प्रबंधन सेवाएं प्रदान की जा रही है. हमारे कार्पोरेट ग्राहक इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं. यह हमारी शुल्क आधारित आय को बढ़ाने का एक अच्छा माध्यम है. इस सेवा से हमें अधिक से अधिक ग्राहकों को जोड़ने की आवश्यकता है ताकि बैंक के आय के स्थायी एवं जोखिम रहित माध्यमों को बढ़ाया जा सके.

बैंक अपनी विदेशी मुद्रा नामित शाखाओं के माध्यम से विदेशी मुद्रा व्यापार और अन्य वित्तीय सेवाएं उपलब्ध कराता है. कॉर्पोरेट वित्तीय सेवा शाखा (सीएफएस), अंतर्राष्ट्रीय व्यापार शाखा (आईबीबी), लघु और मध्यम उद्यम शाखाएं (एसएमई) बैंक के विदेशी मुद्रा कारोबार, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रक्रिया में अपना योगदान करती हैं. इन शाखाओं के माध्यम से जहां एक ओर बैंक के आय संवर्द्धन को गति मिलती है वहीं दूसरी ओर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बैंक की प्रभावी उपस्थिति परिलक्षित होती है. गिफ्ट सिटी गांधीनगर में कार्यरत आइएफएससी बैंकिंग यूनिट बैंक के अंतर्राष्ट्रीय कारोबार को सशक्त एवं व्यापक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है. आवश्यकता है कि इन इकाइयों का हम अधिकतम लाभ उठाते हुए बैंक के लिए अधिक से अधिक व्यवसाय संग्रहण एवं आय संवर्धन करें.

मुझे पूरा विश्वास है कि हम सभी बैंक के व्यवसाय विकास में अपना बहुमूल्य योगदान देते रहेंगे और अपने बैंक को बैंकिंग उद्योग के शीर्ष बैंकों में बनाए रखने हेतु अपने-अपने स्तर पर पूरा प्रयास करेंगे. मैं आप सभी की सफलता की कामना करता हूँ.

शुभकामनाओं सहित,

देबदत्त चांद

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है.

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और भारतीय बैंकिंग ने भी परंपरागत बैंकिंग से अपनी यात्रा शुरू करते हुए आज डिजिटल स्वरूप को आत्मसात किया है. हमारा बैंक ग्राहकों को आसान एवं अनुकूल बैंकिंग सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से लगातार अपने डिजिटल उत्पादों को अधिक सुविधायुक्त बना रहा है. अपनी इस रूपांतरण यात्रा में बैंक का यह प्रयास रहा है कि वह अपने डिजिटल सेगमेंट में नवोन्मेषी पहलें करे और आंतरिक दक्षताओं को बेहतर बनाते हुए लागत को कम कर सके. हमें बेहद खुशी है कि बैंक की यह पहलें फलीभूत हुईं और ईज़-4.0 रिफॉर्म इंडेक्स में बैंक ऑफ़ बड़ौदा को वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए 'समग्र रूप से श्रेष्ठ प्रदर्शनकर्ता बैंक' के रूप में सम्मानित किया गया है. पिछले वर्ष भी ईज़ 3.0 पीएसबी बैंकिंग रिफॉर्म इंडेक्स के अंतर्गत हमारा बैंक द्वितीय स्थान पर रहा था. यह हम सभी के समन्वित प्रयासों का ही परिणाम है.

भारत सरकार भी बैंकिंग के डिजिटल स्वरूप को लगातार प्रोत्साहित कर रही है. दिनांक 16 अक्तूबर, 2022 को हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने देश के 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग यूनिट का शुभारंभ किया है जिनमें से 8 डिजिटल बैंकिंग यूनिटें बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा खोली गई हैं. डिजिटल बैंकिंग यूनिट दो प्रणालियों में कार्य करेगी- सेल्फ सर्विस जोन और डिजिटल असिस्टेंस ज़ोन. डिजिटल बैंकिंग यूनिट के अंतर्गत पेशकश की जाने वाली सुविधाएं वर्ष में 24x7, 365 दिन आधारित होंगी. इन सुविधाओं में नकदी आहरण एवं जमा, खाता खोलना, सवाधि/आवर्ती जमा खाता खोलना, डिजिटल ऋण प्राप्त करना, पासबुक प्रिंटिंग, शेष पूछताछ, निधि अंतरण सहित अन्य कई सुविधाएं शामिल हैं.

हमारा बैंक ग्राहकों की सुविधाओं को ध्यान में रखते समय भाषा के महत्व को भी समझता है, इसलिए अपने डिजिटल उत्पादों में भाषाओं के समावेश पर लगातार ध्यान केंद्रित किए हुए है. हमारे बैंक के इंटरनेट बैंकिंग पोर्टल को ग्राहकों के लिए अब हिंदी में भी लाइव कर दिया गया है. ग्राहक हमारे सभी कार्यकलापों के केंद्र में हैं एवं बैंक अपनी इस रूपांतरण यात्रा को ग्राहकों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ा रहा है. इन सभी पहलों का एक लक्ष्य यह भी है कि शाखाओं में ग्राहकों की भौतिक उपस्थिति को कम किया जा सके और हमारी शाखाओं में कार्यरत स्टाफ सदस्य अन्य उत्पादक कार्यों में अपना योगदान दे सकें.

हम सभी को साथ मिलकर हमारे बैंक को और आगे ले जाना है और ग्राहक अनुभव के उच्चतम मानक हासिल करना है. आने वाले सभी त्योहार आप सभी के जीवन में ढेरों खुशियां लेकर आएं, ईश्वर से यही प्रार्थना है.

शुभकामनाओं सहित,

जयदीप दत्ता राय

जयदीप दत्ता राय

कार्यकारी संपादक की कलम से

बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के माध्यम से आप सभी के साथ संवाद स्थापित करना और आप सभी से जुड़ना हमेशा ही मुझे एक विशेष अनुभूति प्रदान करता है. पत्रिका के माध्यम से हमारा सदैव यही प्रयास रहा है कि स्टाफ सदस्यों की रचनात्मकता को उजागर किया जाए और अखिल भारतीय स्तर पर बैंक में हो रही राजभाषा से संबंधित गतिविधियों को शामिल किया जाए और राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक प्रभावी बनाया जाए. चूंकि बैंक की डिजिटलीकरण की पहल को समर्थन प्रदान करने और बैंक की विभिन्न पत्रिकाओं को पाठकों तक सुलभता से पहुंचाने के उद्देश्य से बॉब अभिव्यक्ति ऐप का शुभारंभ किया गया है जिसमें हमारी गृह पत्रिका बॉबमैत्री और हमारे अन्य कॉर्पोरेट न्यूजलेटरों के साथ-साथ यह पत्रिका भी उपलब्ध है. बॉब अभिव्यक्ति ऐप को अभी तक 37 हज़ार लोगों ने अपने मोबाइल में इन्स्टाल कर लिया है. बैंक के स्टाफ सदस्यों के साथ-साथ इस ऐप के माध्यम से हमारे सेवानिवृत्त साथी भी अपनी सुविधा अनुसार इन पत्रिकाओं/ न्यूजलेटरों को पढ़ सकते हैं और सामग्री को लाइक कर सकते तथा अपना फीडबैक दे सकते हैं. हमारी कोशिश है कि हमारे सभी स्टाफ/ पूर्व स्टाफ इस ऐप को शीघ्र अपने मोबाइल पर डाउनलोड कर लें. यह बैंक द्वारा विकसित ऐप है, अतः पूरी तरह सुरक्षित है और इसे https://emag.bankofbaroda.in लिंक के माध्यम से डाउनलोड किया जा सकता है.

सितंबर 2022 माह पूरे बैंक में हिंदी माह के रूप में मनाया गया. पूरे बैंक में राजभाषा संबंधी आयोजन किए गए. तदनुसार पत्रिका के इस अंक को हिंदी दिवस विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है जिसमें हमने विभिन्न कार्यालयों में आयोजित हिंदी दिवस समारोह के साथ बैंकिंग व्यवसाय में हिंदी एवं मातृभाषा की भूमिका के महत्व पर बैंक के सभी अंचल प्रमुखों एवं विदेशों में स्थित कार्यालयों के प्रमुखों के विचार को प्रकाशित किया है. निश्चित रूप से आप सभी हमारे शीर्ष नेतृत्व के भाषा संबंधी विचारों को पढ़ना चाहेंगे.

पत्रिका के इस अंक में हमने बैंक के कार्यालयों में आयोजित विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ प्रसिद्ध लेखिका एवं उपन्यासकार पद्मश्री डॉ. उषा किरण खान का साक्षात्कार प्रकाशित किया है जिन्हें अपनी रचनाओं के लिए ''भारत भारती'' सम्मान एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी पुरस्कृत किया गया है. साथ ही हमने अंक में श्री रोहित कपूर का आलेख ''मेरी त्रियुंड यात्रा'', श्रीमती श्वेता मिश्रा द्वारा ''हिंदी का वैश्वीकरण - उपादेयता एवं प्रासंगिकता'', श्रीमती कोमल बिजलानी द्वारा ''हैप्पी हार्मोन - खुशियों की कुंजी'', श्री सुंदर सिंह द्वारा ''आयुर्वेद'' एवं श्री प्रेम प्रियदर्शी द्वारा ''ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के समग्र विकास में एमएसएमई उद्यमों का योगदान'' जैसे विभिन्न विषयों पर आलेख प्रकाशित किया है. इस अंक में हमने कॉर्पोरेट कार्यालय में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी की अध्यक्षता में वार्षिक राजभाषा समारोह की भी विशेष प्रस्तुति दी है.

आखिर में यही कहना चाहूंगा कि किसी भी पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य तभी सार्थक सिद्ध होता है जब पाठक को पत्रिका पहले से ज्यादा रुचिकर लगे और वह अगले अंक का इंतज़ार करें. मुझे यकीन है कि आप सभी को यह अंक अवश्य पसंद आएगा और इस पत्रिका को बेहतर से बेहतरीन बनाने के प्रयास में आप हमें अपने अभिमत एवं सुझाव से अवश्य अवगत कराएंगे.

शुभकामनाओं सहित,

संजय सिंह

प्रमुख - राजभाषा एवं संसदीय समिति

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

वर्ष – 18 * अंक – 71 * जुलाई–सितंबर, 2022

–: कार्यकारी संपादक :–

संजय सिंह

प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

–: संपादक :–

पुनीत कुमार मिश्र

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

–: सहायक संपादक :–

अम्ब्रेश रंजन कुमार

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. सुमेधा

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

–: संपर्क :–

राजभाषा विभाग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन, पांचवी मंजिल,
आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा – 390007

फोन : 0265–2316581

ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com
akshayyam@bankofbaroda.com

राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी,
बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित.

रुपांकन एवं मुद्रण

मे. प्रिंट प्लस प्रा.लि.,
212, स्वस्तिक चेंबर्स, एस.टी. रोड,
चेंबूर, मुंबई 400071.

प्रकाशन तिथि : 01/11/2022

सूचना :

बैंक के स्टाफ सदस्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं/ सामग्री ई–मेल: akshayyam@bankofbaroda.co.in पर भेज सकते हैं.

अनुक्रमणिका

इस अंक में

पद्मश्री डॉ. उषा किरण खान का साक्षात्कार 7–10

हिंदी दिवस के अवसर पर विशेष :
बैंक के शीर्ष नेतृत्व के विचार... 11–20

ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के समग्र विकास में एमएसएमई उद्यमों का योगदान 21–23

सुकून और प्रकृति की गोद : मेरी त्रियुंड यात्रा 28–29

हिंदी का वैश्वीकरण – उपादेयता एवं प्रासंगिकता ... 31–32

हैप्पी हार्मोन – खुशियों की कुंजी 33–34

आयुर्वेद और स्वास्थ्य 35–36

अपने ज्ञान को परखिए 48

बैंकिंग शब्द मंजूषा..... 49

चित्र बोलता है..... 50

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा के सभी स्टाफ सदस्यों/ पूर्व स्टाफ सदस्यों के लिए प्रकाशित की जाती है. इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

''हिंदी के विकास में मातृभाषाओं की विशेष भूमिका रही है''

देश की सुविख्यात साहित्यकार, उपन्यासकार, कहानीकार एवं नाटक लेखिका पद्मश्री डॉ. उषा किरण खान जी अपनी रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं. हिंदी साहित्य जगत में महादेवी वर्मा के बाद आप द्वितीय साहित्यकार हैं जिन्हें साहित्य जगत के सर्वोच्च पुरस्कार **''भारत भारती''** से सम्मानित किया गया है. इसके अलावा, आपको साहित्य **अकादमी पुरस्कार** से भी पुरस्कृत किया गया है. मूल रूप से हिंदी एवं मैथिली भाषा में आपने विविध उपन्यास एवं कहानियों की रचनाएं की हैं. *दूबधान, हसीना मंजिल, भामती, घर से घर तक, विवश विक्रमादित्य एवं चिड़ियां चुग गई खेत* आपकी ख्यातिलब्ध रचनाएं हैं. हिंदी और मैथिली भाषा के संवर्द्धन में आपके अतुलनीय योगदान स्वरूप आपको राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय सम्मानों से नवाजा जा चुका है. प्रस्तुत हैं उनके साथ बातचीत के कुछ अंश – टीम अक्षय्यम्

कृपया अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में बताएं?

मेरा जन्म 24 अक्तूबर, 1945, लहेरियासराय, दरभंगा (बिहार) में हुआ. मेरा जन्म जब हुआ तब मेरे पिता स्थापित समाज सुधारक गांधीवादी, समाजवाद की ओर झुके हुए राजनीतिक व्यक्तित्व थे. उनका साहित्य की ओर अधिक झुकाव था. अतः हमारे आवास पर अनेक साहित्यकार, चित्रकार एवं साहित्यकर्मी आते रहते थे. अतः सौभाग्य से जीवन के आरंभिक दौर में ही मुझे समृद्ध साहित्यिक परिवेश मिला. अपने घर के समरस वातावरण और नगर की समावेशी संस्कृति ने मुझे एक अलग व्यक्तित्व प्रदान किया. मैं जब 7 वर्ष की थी तब पटना के एक मिशन स्कूल ऐंग्स गर्ल्स स्कूल में पढ़ने आयी यहां प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त हुई. तत्पश्चात् इंटर साइंस में तथा आगे इतिहास और पुरातत्व की पढ़ाई करने के लिए पटना कॉलेज में दाखिला लिया. इसके बाद एम.ए के दौरान ही घर-गृहस्थी और रचना संसार एक समानांतर रूप से जारी रहा.

लेखन-पठन के क्षेत्र में आपका कार्य बहुत ही व्यापक और विविध है इसके साथ ही सामाजिक उन्नयन के प्रति भी आपकी प्रतिबद्धता है. आप इतना कुछ एक साथ कैसे कर पाती हैं?

मेरे पिताजी साहित्य के प्रेमी थे. अतः प्रतिष्ठित साहित्यकारों का मेरे यहां आना-जाना होता रहा और उनके सानिध्य में मेरे अंदर साहित्यिक अभिरुचि विकसित हुई तथा लिखने की भी प्रेरणा मिली. आरंभिक जीवन में हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य शिव पूजन सहाय इत्यादि वरिष्ठ साहित्यकारों से प्राप्त प्रेरणा और मार्गदर्शन के परिणामस्वरूप साहित्य मेरे संस्कार में समाहित होता चला गया. मैंने लेखनी की शुरुआत कविता से की तत्पश्चात समसामयिक विषयों पर हिंदी तथा मैथिली में लिखने की परिपाटी विकसित हुई. साहित्य समाज की चित्तवृति होती है इसलिए साहित्यिक अभिरुचि में सामाजिक भावना स्वतः निहित है. इसके लिए अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है. मैं समझती हूं कि साहित्यिक योगदान और सामाजिक समरसता एक दूसरे के पूरक हैं.

कृपया अपने लेखन के बारे में बताएं? आपने कब लिखना शुरू किया? आपकी पहली रचना कब प्रकाशित हुई?

शुरू में मैंने स्कूल की पत्रिकाओं में लिखा. बाबा नागार्जुन मेरे पिता के गहरे दोस्त थे. हमारे घर उनका आना-जाना हमेशा रहा. थोड़ी बड़ी हुई तो मैं उनके साथ मंच पर कविता पढ़ने जाने लगी थी किंतु अपनी रचनाएं लिखकर सहेजूं या कहीं छपवाऊं मुझमें यह समझ थी ही नहीं.

बाबा नागार्जुन ने एक दिन कहा- अब लिखना शुरू करो 'हम बोले अब हम पद्य नहीं गद्य लिखेंगे' तो वो बोले-ठीक है वही लिखो, यह सन् 1977 की बात है तब मेरी उम्र 30-32 वर्ष रही होगी वापस लिखना शुरू किया.

कृपया हिंदी के विकास में क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व पर प्रकाश डालें?

हिंदी की समावेशी प्रकृति ने जहां एक ओर हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान की है वहीं दूसरी ओर क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों ने हिंदी के स्वरूप को संवर्धित किया. चाहे मैथिली, भोजपुरी, मगही या कोई अन्य मातृभाषा हो, समग्रता में इन भाषाओं के समावेश के कारण ही हिंदी वृहद स्वरूप में विकसित हुई और हिंदी की सुग्राह्यता तथा स्वीकार्यता बढ़ी है.

प्राचीन काल में संस्कृत विद्वानों की भाषा के रूप में मानी गयी तथा कन्याकुमारी से रामेश्वरम तक लोग संस्कृत को सहजता से समझ नहीं पाते थे और ऐसी स्थिति में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता उत्पन्न हुई. भाषाओं के विकास के क्रम में लगभग 1000 मातृभाषाएं हिंदी में समाहित होती चली गयी. हिंदी की समावेशी प्रकृति के कारण हिंदी की स्वीकार्यता भी बढ़ी.

आधुनिक इतिहास की दृष्टि से उत्तर भारत के समाज के जनसाधारण के लिए बोधगम्य बनाने हेतु रामकथाएं अवधि भाषा में लिखी हैं. मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित **पद्मावत** में हिंदी का आधार 50% से अधिक है. विश्व में सर्वाधिक बिकने वाली किताब **रामचरित मानस** बोधगम्य भाषा अवधि में रचित है. अवधि भाषा और मैथिली भाषा में परस्पर अधिक नजदीकी संपर्क है, यह ऐतिहासिक, पौराणिक और लोकव्याप्त तथ्य है.

राजकाज के लिए हिंदी के उपयोग को समय की मांग के रूप में देखा गया परिणामतः हिंदी को राजभाषा का दर्ज दिया गया. हिंदी की खूबसूरती इस बात में है कि यह आपसी सद्भाव और प्रेम की भाषा है.

साहित्यकारों ने भाषा को संरचना प्रदान किया है, भाषा की बनावट और बुनावट दोनों के लिए साहित्यकार ही जिम्मेदार हैं. संत और भक्ति काल के साहित्यकारों ने भाषा को जनसंपर्क का स्वरूप प्रदान किया. भक्ति काल भाषा और साहित्य दोनों के उद्भाव तथा विकास की दृष्टि से अति-महत्वपूर्ण है. भक्ति काल में अनेक भाषाओं के प्रयोग मिलते हैं जैसे कि सूरदास-ब्रज भाषा, तुलसीदास-अवधि भाषा, कबीर-सधुकड़ी भाषा, मीराबाई-राजस्थानी भाषा, जायसी की पद्मावत हिंदी के अधिक नजदीक है. इस प्रकार हिंदी भाषा का वैयक्तित्व संपर्क भाषा के रूप में विकसित होती चली गई.

हिंदी ने भारत के विस्तृत भू-भाग के विभिन्न प्रदेशों को आपस में जोड़ने का कार्य किया है, खड़ी बोली या सधुकड़ी भाषा को वास्तविक स्वरूप क्षेत्रीय भाषाओं ने ही प्रदान किया है. दक्षिण भारत का तिरुपति मंदिर हो अथवा उत्तर भारत में बाबा विश्वनाथ मंदिर संवाद और संपर्क भाषा के रूप में खड़ी बोली सब समझ रहे हैं.

हिंदी में मातृभाषाओं का विशेष योगदान है और हिंदी भाषा की मिठास भी क्षेत्रीय/ मातृभाषाओं से आती है. उदाहरण स्वरूप विद्यापति की दो पंक्तियां निम्नानुसार हैं:

'देशीज़ बयना सबजन मीठा' अर्थात् मातृभूमि, मातृभाषा सभी के लिए प्रिय और मीठी है. विद्यापति संस्कृत भाषा के थे परंतु उन्होंने महसूस किया कि संस्कृत जनसामान्य की भाषा नहीं है. अतः रचनाओं/ संदेश को जनसामान्य के लिए सुग्राह्य बनाने के लिए उनकी ही भाषा में लिखना आवश्यक है. अतः उन्होंने मैथिली भाषा में लिखना आरंभ किया.

मेरा मानना है कि ग्लोबलाइजेशन के दौर में प्रयुक्त रोमन

हिंदी और इसके प्रयोग को प्रचारित करने के प्रयास वास्वतिक रूप में हमारी हिंदी/ मातृभाषाओं को नष्ट कर रहा है. भाषा अगर अपनी ही लिपि में लिखी जाए तो उसका प्रभाव और सौंदर्य विशेष होता है. अतः हिंदी को रोमन लिपि में न लिखें तभी भाषा का स्वरूप बचेगा और भाषा बचेगी.

क्या हिंदी भाषा की वृद्धि मैथिली, भोजपुरी और मगही जैसी मातृभाषाओं के लिए खतरा/ चिंता का कारण है?

मेरा मानना है कि यह एक अनावश्यक द्वंद और भ्रम उत्पन्न करने वाला विषय है. यह विडम्बना है कि हिंदी साहित्य जगत और अन्य संदर्भों में इस प्रश्न पर अनावश्यक रूप से चिंतन – मनन की स्थिति उत्पन्न की जा रही है कि मातृभाषा को हिंदी दबा रही है. यह निरर्थक सोच-विचार है क्योंकि हिंदी का आधार मातृभाषाएं हैं. अतः हिंदी का विकास और संवर्धन मातृभाषा के लिए चिंता का विषय नहीं हो सकता है. मैं दोनों भाषाओं में लिखती और दोनों भाषाओं के क्षेत्र में मैंने पहचान बनाने की कोशिश की है. मेरे सामने उत्पन्न स्थिति, पूछे गए प्रश्न से बिल्कुल अलग है. मैंने यह अनुभव किया है कि मेरी हिंदी रचनाओं के पाठकों को लगता है कि मैं हिंदी को पूरा समय नहीं दे पा रही हूं वहीं मैथिली के पाठकों को लगता है कि मैं मैथिली को अधिक समय नहीं दे पा रही हूं. यह चिंता का कारण नहीं बल्कि एक सुखद अनुभूति का विषय है. एक भाषा कभी भी दूसरी भाषा के लिए चिंता या खतरा का कारण नहीं बन सकती है बल्कि यह एक दूसरे के संवाहक और पूरक के रूप में कार्य करती हैं. भाषाओं का विकास सतत् चलने वाली प्रक्रिया है. अतः यह अपना विकास स्वाभाविक रूप से करती रहती है. हिंदी आज एक विशाल वट वृक्ष के रूप में स्थापित हो चुकी है परंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसका आधार मातृभाषाएं हैं. आधार को नष्ट करने के प्रयास न करें बल्कि आधार को और सुदृढ़ बनाने के प्रयास किए जाने चाहिए ताकि इसके आधार पर हिंदी और सशक्त बनें. हिंदी साहित्य जगत में इसी प्रकार का एक विषय उद्धृत हुआ है क्योंकि विद्यापति मैथिली में लिखते थे. अतः उन्हें हिंदी साहित्य में मुख्य स्थान नहीं दिया जाना चाहिए जो कि बिल्कुल ही अस्पष्ट और आधारहीन विचार है. मेरा मानना है कि मातृभाषाओं के पूट से हिंदी साहित्य संवर्धित और विकसित हुई है. इसलिए हिंदी से मैथली भाषा के रचनाकर विद्यापति को हटाने से मैथिली का कुछ नहीं बिगड़ेगा बल्कि हिंदी भाषा की समवेशी पूट और बोधगम्यता पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है. अतः इससे स्पष्ट है कि हिंदी से मातृभाषाओं को कोई खतरा नहीं है.

हिंदी भाषा में मैथिली भाषा की मिठास को कैसे समाहित कर सकते हैं?

हिंदी भाषा स्वतः ही प्रेम और आत्मीयता की भाषा है और यह निरंतर प्रगतिशील है. हिंदी भाषा की संरचना और विकास में क्षेत्रीय तथा मातृभाषाओं की विशेष भूमिका रही है. अतः हिंदी में मातृभाषा के स्वरूप निहित हैं. मातृभाषा के प्रति सभी के मन में एक विशेष भावना रहती है. अतः यह भाव भले ही हमें राजभाषा में न मिले तथापि उसका स्वरूप इसमें अवश्य ही परिलक्षित होगा. हिंदी का संसार वृहद और समृद्ध है तथा इसमें मातृभाषाओं के पूट इसे अत्याधिक लोकप्रिय बनाते हैं. मैथिली भाषाओं के शब्दों को उधार लेकर हम हिंदी में मिठास का भाव समाहित कर सकते हैं. उधार लेने का अभिप्राय हिंदी वाक्य संरचना में

मैथिली के शब्दों के प्रयोग से है. जिस प्रकार फणीश्वरनाथ रेणु और विद्यापति ने अपनी रचनाओं में मातृभाषाओं के पूट को समाहित किया है. तदनुसार, हमें हिंदी की रचनाओं में स्थानीयता का भाव समाविष्ट करने का प्रयास करना चाहिए इसके फलस्वरूप इसमें स्थानीयता का भाव और मिठास स्वतः समाहित हो जाएगा.

ऐसी अवधारणा है कि भाषा जीविका का माध्यम बनेगी तभी उसका प्रसार होगा–मातृभाषा के प्रसार में इस विचार को आप कैसे देखती हैं?

मेरे विचार में भाषा और रोजगार का प्रश्न अत्यंत ही महत्वपूर्ण है तथापि इसके प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है. पढ़ने के प्रति सतत् ईमानदारी और निरंतर सीखने की भावना आपके लिए रोजगार का आधार स्थापित कर सकते हैं. भाषा का अभिप्राय या उद्देश्य संवाद कौशल के रूप में देखा जाना चाहिए. भाषा के माध्यम से अगर आप गणित या विज्ञान को साधने की सोच रखेंगे तो यह सार्थक नहीं होगा. भाषा का अध्ययन निरंतर जारी रखें, न सिर्फ जारी रखें बल्कि उससे निरंतर कुछ सीखने की कला को विकसित करते रहें. आपके पास कौशल और ज्ञान निहित होगा तो इस प्रक्रिया के माध्यम से ही सफलता या रोजगार के परिणाम परिलक्षित होंगे. भाषा अध्ययन प्रक्रिया का विषय है. इसे रोजगार अर्थात् परिणाम के साथ जोड़कर नहीं आंकना चाहिए. उदाहरण के रूप में, मैं खुद को लेती हूं. मैंने जो शिक्षा ग्रहण की है या जो भी ज्ञान अर्जित किया है, उसे अपनी लेखनी के माध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है. मैं आज भी कलम से ही लिखती हूं जबकि आज कंप्यूटर और ब्लॉग का दौर है. मेरे लिए जो कलम की उपयोगिता है उसके स्थान पर किसी और माध्यम की नहीं. मातृभाषा का प्रश्न आत्मीयता और जुड़ाव का प्रश्न है तथा परिस्थितियां अनुकूल हों या प्रतिकूल माता के प्रति निष्ठा का भाव बनाए रखें, यही आपका बुनियाद, आपकी सफलता का आधार है. मैं अमेरिका विश्व हिंदी सम्मेलन में गई. वहां बोस्टन में एक ऐसे परिवार से परिचय हुआ जो लगभग सदियों से अपनी मातृभाषा मैथिली से जुड़े हुए हैं और अभी भी मैथिली बोलते हैं. अतः यह आपकी पहचान और आपकी संस्कृति का पूरक है. अतः इसमें रोजगार के बजाय व्यक्तित्व ढूंढने का प्रयास कीजिए. मातृभाषा और भाषाओं को भाषा की दृष्टि से मूल्यांकन करना सार्थक होगा.

मौजूदा दौर में हिंदी लेखन की दशा और दिशा को लेकर आपके विचार?

यह एक वृहद और व्यापक प्रश्न है, जिसमें विस्तृत चर्चा और गहन अध्ययन की आवश्यकता है, अगर सामान्य पाठक की दृष्टि से इस प्रश्न को देखते हैं तो यह आभास होगा कि हिंदी लेखन की समृद्ध परंपरा रही है और इसमें निरंतर उत्कृष्ट रचनाएं लिखी जा रही हैं. हिंदी लेखन में विविध शैलियों का समावेश है और लेखन शैली स्वतः ही स्वाभाविक तौर पर हिंदी की दशा और दिशा निर्धारित कर रही है. समान्यतः साहित्य चाहे वह किसी भी भाषा से संबद्ध हो उसकी दशा और दिशा निर्धारित नहीं की जा सकती है क्योंकि प्रत्येक लेखक रचनाकर की अपनी रचना दृष्टि, विशेष विचारधारा और विशिष्ट शैली होती है. अतः उसमें समकालीन लेखकों के बीच तुलना अथवा उसकी दशा दिशा तय करना समीचीन और स्वाभाविक नहीं है.

कार्यालयीन प्रयोग में हिंदी में दुरूह होने का लांक्षण लगाया जाता है, पर विगत एक दशक में इसमें काफी परिवर्तन हुआ है, इसे और अधिक बोधगम्य बनाने के लिए क्या करना चाहिए?

मेरे दृष्टिकोण में भाषाई प्रश्नों के समाधान हेतु कार्यालय में एक समिति गठित की जानी चाहिए जिसमें भाषा से जुड़े प्रश्नों को लेकर बैठक और आपसी विचार-विमर्श के आधार पर प्रासंगिक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए. प्रयोग की जाने वाली भाषा की बोधगम्यता पर विशेष बल दिया जाना चाहिए क्योंकि संवाद की भाषा बोधगम्य होगी तो संवाद एवं विचार स्वतः ही स्वाभाविक और प्रभावी होंगे. उदाहरणस्वरूप आकाशवाणी पर एक कार्यक्रम का प्रसारण होता है ''कृषि चर्चा'' जो निश्चय ही किसानों के ज्ञानवर्द्धन के लिए है. इस कार्यक्रम के दौरान जब मैंने पहली बार 'मृदा जांच' सुना तो मुझे इसका भाव और अर्थ समझने में कठिनाई हुई. अतः हमें दुरूह भावों से युक्त शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए. भाषाई प्रयोग और संवर्द्धन को लेकर काफी परिवर्तन हुआ है और परिवर्तन हो भी रहे हैं जिससे हिंदी प्रयोग को सरलीकृत और बोधगम्य बनाने में मदद मिलेगी.

***

भाषा एवं शब्दों का हमारे जीवन में काफी महत्वपूर्ण स्थान है. संप्रेषण, संवाद, संपर्क, संबंध इन सबकी बुनियाद भाषाएं ही होती हैं. इसमें भी जब अपनी भाषा की बात हो तो जीवन के पंचतत्वों की तरह इसकी हमारी दिनचर्या में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका है. हिंदी दिवस अपनी भाषाओं के प्रति सम्मान का दिवस है. इस अवसर पर हिंदी भाषा के संबंध में हमने हमारे अंचल प्रमुखों तथा विदेशी टेरीटरी प्रमुखों के विचार आमंत्रित किए हैं. इनके विचारों से गुजरते हुए आप निश्चित तौर पर हमारी भाषाओं की हमारे जीवन में भूमिका को व्यापक रूप से महसूस कर पाएंगे. – कार्यकारी संपादक

अपनी भाषा, अपना देश – बैंक के शीर्ष नेतृत्व के विचार...

"सरकारी कामकाज में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण है."

बैंक सेवा प्रदायी संस्था है जिसमें जमा लेने एवं उधार देने के नियमों के तहत कार्य किया जाता है. आम नागरिकों को इन नियमों की सटीक जानकारी पहुंचाने के लिए लिखित व मौखिक माध्यम से भाषा का प्रयोग किया जाता है. संगठनात्मक दृढ़ता, चाहे वह अपने स्टाफ सदस्यों के लिए हो अथवा ग्राहकों के लिए वह तभी संभव है, जब हम भाषायी आधार पर हिंदी व क्षेत्रीय भाषा में विचारों का आदान – प्रदान करते हैं. अपनी भाषायी प्रक्रिया में प्राप्त किया गया ज्ञान ही सर्वोत्तम ज्ञान है.

तिलक कहते हैं कि – **"नि:संदेह हिंदी दूसरे कार्यों के लिए प्रान्तीय भाषाओं की जगह तो ले ही नहीं सकती. सब प्रान्तीय कार्यों के लिए प्रान्तीय भाषाएं ही पहले की तरह काम में आती रहेंगी. प्रान्तीय शिक्षा और साहित्य का विकास प्रान्तीय भाषाओं के द्वारा ही होगा."** क्षेत्रीय भाषाओं की शक्ति व विस्तार सरकारी कार्यों को पूर्ण करने में सदैव सहायक सिद्ध हुआ है. सरकारी नीतियों को सुगमता से देश के दूर-दराज इलाकों तक पहुंचाने में क्षेत्रीय भाषाओं की अहम भूमिका रही है. सभी सरकारी योजनाएं, बैंक के नए उत्पाद, खाता परिचालन संबंधी नई नीतियां, केवाईसी के महत्व, किसानों हेतु विविध योजनाओं व लाभ आदि की जानकारी हेतु ग्राम चौपाल, रात्रि चौपाल, प्रचार सामग्री आदि में क्षेत्रीय भाषाओं का समावेश व्यवसाय विकास का प्रमुख अंग है.

अतः हम कह सकते हैं कि देश में जितनी भी क्षेत्रीय भाषाएं हैं वे अपने भाषायी सौष्ठव व कलेवर से भारत को भाषायी सुदृढ़ता प्रदान करती हैं.

महेश एम. बंसल
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख
अहमदाबाद अंचल

"व्यवसाय विकास में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं की भूमिका समय की मांग है."

बैंकिंग सेवा क्षेत्र के अंतर्गत आता है और अगर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की बात की जाए तो इनका उद्देश्य वित्तीय समावेशन के प्रयोजन से बैंकिंग रहित लोगों तक बैंकिंग सेवाएं पहुंचाना है. भारत सरकार की कई महत्वाकांक्षी योजनाओं का क्रियान्वयन भी इन्हीं बैंकों के माध्यम से किया जा रहा है. ऐसे में यह बहुत जरूरी हो जाता है कि बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं के बारे में लोगों को पूर्ण जानकारी प्रदान की जाए. यह जानकारी प्रदान करने में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है. भारत में अंग्रेजी जानने वाले लोगों की संख्या हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं को जानने वालों की संख्या से काफी कम है और इसमें यह पक्ष भी महत्वपूर्ण है कि जो लोग अंग्रेजी जानते हैं प्रायः हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की जानकारी भी रखते हैं. अतः यदि हम इन भाषाओं का प्रयोग कर ग्राहकों तक पहुंचेंगे तो हम एक बड़े वर्ग तक पहुंच सकते हैं जबकि केवल अंग्रेजी के प्रयोग से यह पहुंच सीमित हो जाएगी. इस बात के महत्व को समझते हुए हमारा बैंक अपने उत्पादों, सेवाओं एवं विभिन्न ऐप को हिंदी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध करवा रहा है. इससे न केवल व्यवसाय विकास में सहायता मिलती है बल्कि ग्राहकों से जुड़ाव भी बढ़ता है. इससे अपनत्व की भावना विकसित होती है. उक्त पृष्ठभूमि में यह कहा जा सकता है कि व्यवसाय विकास में हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है एवं आज के समय की मांग है.

राजेश कुमार सिंह
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख
बड़ौदा अंचल

"तमाम चुनौतियों के बावजूद हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार हो रहा है."

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है. विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं. भारत में हिंदी और अनेक क्षेत्रीय भाषाएं बोली जाती हैं, फिर भी अंग्रेजी का बोलबाला है. हिंदी सहित अन्य क्षेत्रीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं, इसलिए इनका प्रसार करना प्रत्येक भारतीय का दायित्व है. लेकिन इसमें हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसमें प्रमुख है - हिंदी/ क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा प्रदान करना. हिंदी/ क्षेत्रीय भाषाओं में उच्चत्तर शिक्षा की मूल किताबें उपलब्ध नहीं हैं, साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं में तकनीकी शब्दावली विकसित नहीं हुई है. अनूदित किताबों में गुणवत्ता का अभाव है, खासकर डिजिटल शिक्षा जो एक नया डोमेन है, जिसमें अधिकतम अंग्रेजी सामग्री ही उपलब्ध है. संकाय की भी कमी है. लोग वही शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं जिससे उन्हें रोजगार प्राप्त हो सके और वे अपने को उच्च वर्ग में शामिल कर सकें. कैंपस प्लेसमेंट उन्हीं छात्रों को मिलता है जो अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा पा रहे हैं/ अंग्रेजी में प्रवीण हों. आजकल के युवा विदेश जाकर बसना पसंद करते हैं जिसके लिए अंग्रेजी की जानकारी ही "वीज़ा" के रूप में काम आती है. यहां तक की लोग विदेश जाने के लिए फ्रेंच, जर्मन, आदि विदेशी भाषाएं सीखना पसंद करते हैं.

दूसरी तरफ क्षेत्रीय भाषाओं को लेकर कुछ सकारात्मक रुझान भी दिखाई दे रहे हैं जैसे दक्षिण से लोग रोजगार की तलाश में उत्तर भारत जाते थे और अपने दैनंदिन काम चलाने के लिए हिंदी सीख लेते थे. लेकिन आजकल इस ट्रेंड का रिवर्स हो रहा है जैसे हम देखते हैं कि बेंगलूरु, हैदराबाद जैसे शहरों में रोज़गार की तलाश में उत्तर भारत से लोग आ रहे हैं और कन्नड, मलयालम जैसी भाषाएं सीख रहे हैं. इसी प्रकार आजकल ओटीटी प्लेटफॉर्म में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का इतना सारा कंटेन्ट मौजूद है जिसका लोग आस्वादन कर रहे हैं. आजकल टियर II,III शहरों की जनता को आकर्षित करने के लिए कंपनियां हिंदी, क्षेत्रीय भाषाओं में ही विज्ञापन प्रकाशित करवा रही हैं. आजकल जो भी फिल्म हिंदी और किसी क्षेत्रीय भाषा में रिलीज़ होती है उसी समय बहुत सारी भाषाओं में 'डब' होकर रिलीज़ होती है.

हम कह सकते हैं कि यदि क्षेत्रीय भाषाओं का प्रसार होना है तो शिक्षा के स्तर पर इन्हें बढ़ावा देना होगा, इन्हें रोज़गार परक बनाना होगा, वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना होगा. हमें सामूहिक रूप से इसके प्रसार में जुड़ना होगा.

सुधाकर डी.नायक.ए.
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, बेंगलुरु अंचल

"हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएं भारत की संस्कृति की संरक्षक हैं."

जीवन में भाषा की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि इसी के माध्यम से दूरदराज के देशों तक भी संवाद स्थापित किया जा सकता है. जहां तक हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं का सवाल है ये सभी भाषाएं भारत के मूल स्वभाव को दर्शाती हैं. भारत की खूबसूरती इसकी विविधता में है. यह विविधता संस्कृति के स्तर पर है, भाषा के स्तर पर है. हिंदी व क्षेत्रीय भाषाएं भारत की बहुरंगी खूबसूरती को प्रदर्शित करती हैं.

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषाओं के विकास पर काफी ध्यान दिया गया है, जिसमें सुझाव दिया गया है कि जहां तक संभव हो, कम से कम पांचवीं कक्षा तक तो शिक्षा का माध्यम मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा ही होनी चाहिए. ऐसा करने से विद्यार्थियों को अपने देश की संस्कृति, उसके साहित्य को समझने में सहायता मिलती है और यह भारत के बहुभाषी मिजाज़ को समझने में भी सहायक है. भाषाओं के लुप्त होने की चिंता अकारण नहीं है. उनके लुप्त होने से एक संस्कृति के लुप्त होने का खतरा है और संस्कृतियों का लुप्त होना घर का खोना है जो मुझे यकीन है कि हममे से कोई भी यह नहीं चाहता. तो आइए हम सभी अपने प्रयासों से हिंदी और अपनी स्थानीय भाषाओं और बोलियों को बचाएं और अपनी भारतीय संस्कृति को, उसके साहित्य को और पल्लवित व प्रचारित करें.

गिरीश सी. डालाकोटी
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, भोपाल अंचल

"हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से देश में रोज़गार की संभावनाएं प्रबल"

भाषा संस्कृति की पहचान है. सभी भाषाओं में भरपूर ताकत है जो लोगों को रोजगार तक ले जा सकती है. आज के तकनीकी दौर में साहित्य, फिल्म, कला, संस्कृति, ज्ञान - विज्ञान, संचार, बाजार सभी क्षेत्रों में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं की अपनी महत्ता है. किसी भी भाषा पर पकड़ बनाने के लिए भाषा दक्षता की जरूरत होती है. विदेशी कंपनियां और कई देशी कंपनियां अपने ब्लॉग, ऐप एवं वेबसाइट में हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं के वर्जन के लिए इन भाषाओं से संबंधित विशेषज्ञ लोगों की सहायता लेते हैं.

आजकल तकनीक में भी क्षेत्रीय भाषाओं का समावेश है. विभिन्न विदेशी या देशी फिल्म, हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध हैं वैसे ही हम अपनी मनपसंद भाषा में फिल्म देख भी सकते हैं, सुन भी सकते हैं. बहुत सारे अनुवाद संबंधी वेबसाइट्स हैं जिनमें इन भाषाओं के विशेषज्ञों की जरूरत होती है. हिंदी में कंटेट लिखने का कार्य भी आज कल बड़ी संख्या में है. वहीं हिंदी की प्रासंगिकता और उपयोगिता ने हिंदी में अनुवाद कार्य का मार्ग प्रशस्त किया है. आज अनुवाद संबंधी वेबसाइट भी काफी संख्या में उपलब्ध है. इससे काफी संख्या में रोज़गार की संभावनाएं हैं.

श्रीजित कोट्टारत्तिल
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम

''डिजिटल बैंकिंग का स्वरूप हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से ही सार्थक हो सकता है.''

डिजिटल भारत के स्वप्न को साकार करने में डिजिटल बैंकिंग और डिजिटल लेंडिंग की महत्वपूर्ण भूमिका है. आज ज़्यादातर वित्तीय सेवाएं, डिजिटल बैंकिंग के माध्यम से ग्राहकों तक पहुंच पा रही हैं जैसे कि मोबाइल बैंकिंग, व्हाट्सऐप बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, भीम यूपीआई इत्यादि. डिजिटल बैंकिंग को जन-जन तक पहुंचाने में ग्राहकों की आम बोलचाल की भाषा ही कड़ी का काम करेगी. देश के सभी वर्गों के लोगों को हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के योगदान से ही डिजिटल बैंकिंग के बारे में समान रूप से साक्षर किया जा सकता है. भाषा एक ऐसा माध्यम है जो बैंक और ग्राहक के मध्य मित्रता बढ़ाने में सहायक है. हमारे देश में हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाएं भी बड़े पैमाने पर बोली जाती हैं. अतः डिजिटल बैंकिंग (डिजिटल लेंडिंग, खाते खोलना, बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठाना) को आम नागरिकों तक पहुंचाने के लिए जन-जन की भाषा को माध्यम बनाना ज़रूरी है ताकि बैंक के ग्राहक आधार को बढ़ाया जा सके तथा ग्राहक संतुष्टि प्राप्त की जा सके. इस प्रकार हम बैंक की लाभप्रदता में भी बढ़ोत्तरी कर सकेंगे. मौजूदा समय में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की लोकप्रिय भाषा भी हिंदी हो चुकी है, जहां टैगलाइन हिंदी अथवा क्षेत्रीय भाषाओं में दी जाती है तो फिर बैंकिंग इससे अछूती कैसे रह सकती है. इसलिए यह आवश्यक है कि डिजिटल बैंकिंग के स्वरूप को सार्थक करने के लिए हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का समावेश किया जाए.

विमल कुमार नेगी
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, चंडीगढ़ अंचल

''हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की स्वीकार्यता लगातार बढ़ रही है.''

हिंदी भाषा की स्वीकार्यता से संबंधित बहस हमेशा से चली आ रही है. देश भर में आधिकारिक रूप से हिंदी को आम भाषा के रूप में अपनाए जाने के बावजूद, हिंदीतर राज्यों में हिंदी की स्थिति सोचनीय है.

केंद्र सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों की पहल के साथ कई सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाएं हिंदी को एक लिंक भाषा के रूप में बढ़ावा देने के लिए काम कर रही हैं. हिंदी भाषी आबादी का बड़ा भाग विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के लिए एक आकर्षक बाजार बनाता है और इस बाजार का लाभ उठाने के लिए लोगों को भाषा से परिचित होने की जरुरत है.

वर्तमान में सोशल मीडिया ने हिंदीतर राज्यों में हिंदी की दशा और दिशा को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ रही हिंदी की भूमिका से प्रेरित होकर हिंदीतर राज्यों के लोग भी फेसबुक एवं इंटरनेट के माध्यम से हिंदी के निकट आ रहे हैं. कई स्वैच्छिक एजेंसियां हिंदी के ज्ञान के प्रसार में लगी हैं और फिल्मों तथा रेडियो एवं सोशल मीडिया के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से उनके कार्य में सहायता मिलती है. हिंदी के लिए किए जा रहे प्रयासों से इस दिशा में विकास नि:संदेह दिखाई दे रहा है. हिंदी भाषा हिंदीतर राज्यों के साथ-साथ समस्त भारत और अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी में भी अपना सम्मानित गौरवपूर्ण स्थान बना सकेगी, ऐसी संभावना दूर नहीं है और आनेवाले वर्षों में हम हिंदी का विश्लेषण एक विश्व भाषा के रूप में कर सकेंगे.

सरवना कुमार ए.
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, चेन्नै अंचल

''भाषाएं समावेशी प्रगति की अभिव्यक्ति हैं.''

बैंकों की यही विशिष्टता है कि वे मनुष्य की दो मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करते हैं - लेन-देन चाहे वित्तीय हो या व्यावहारिक - धन और भाषा के बिना कोई भी सामाजिक व्यवहार अर्थपूर्ण ढंग से संपन्न नहीं हो पाता.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा ग्राहकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सेवा प्रदान करने के लिए नित नई पहलें करता रहता है. राजभाषा अधिनियम में अंतर्निहित हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर चलने की संकल्पना को साकार करते हुए जन सामान्य की सुविधा के लिए स्थानीय स्तर पर क्षेत्रीय भाषाओं में नामपट्ट, लेखन सामग्री बनवाने से आगे बढ़ते हुए भाषाएं अब डिजिटल भारत में अपने पदचिह्न बना रही हैं. इसे सर्वसमावेशी बनाने की दिशा में बैंक ई-मेल, एटीएम परिचालन, लेन-देन अलर्ट, चैटबॉट संदेश जैसी उन्नत डिजिटल सेवाएं भारतीय भाषाओं में तैयार कर नए उत्पाद, नई सेवाएं ग्राहकों की भाषा में ही प्रदान कर रहा है. समावेशी प्रगति की अभिव्यक्ति इससे बेहतर क्या होगी जिसमें हर वर्ग, हर स्तर, हर प्रांत से हर व्यक्ति प्रगति के पथ पर कदम से कदम मिलाकर चल सके.

मनमोहन गुप्ता
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, हैदराबाद अंचल

"पारिवारिक भाषा के रूप में हिंदी जन-जन की भाषा है."

भारतवर्ष जिसको भाषाई वैविध्य से सुसंपन्न राष्ट्र होने का गौरव प्राप्त है, यह हम सभी भारतीयों के लिए अत्यंत गर्व व सम्मान की बात है कि भारत देश में करीब 1369 मातृभाषाएं विद्यमान हैं, जहां 35 भाषाओं में समाचार पत्र का प्रकाशन होता है, जहां 23 भाषाओं एवं 179 बोलियों में प्रसार-भारती के माध्यम से कार्यक्रमों का प्रसारण होता है. इस देश के संविधान में 22 भाषाओं को आधिकारिक रूप से मान्यता प्राप्त है, ऐसे देश में हिंदी को राजभाषा का दर्ज़ा प्राप्त है. किन्तु महज़ यह संघ की राजभाषा अर्थात् सरकारी कामकाज की भाषा नहीं है वरन यह जन-जन की भाषा है, देश के अधिकतम जनों द्वारा बोली जाने वाली भाषा भी है. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश के 57% भारतीय हिंदी बोलते हैं और 43% लोगों की मातृभाषा हिंदी ही है. यदि हिंदी को पारिवारिक भाषा के रूप में अलंकृत किया जाए तो यह उचित ही होगा क्योंकि टीवी, मीडिया, समाचार चैनलों, बॉलीवुड के माध्यम से यह सम्पूर्ण समाज एवं परिवार की भाषा के रूप में व्याप्त हो चुकी है. एक इंसान जन्म लेने से पूर्व गर्भस्थ शिशु से लेकर मृत्यु पर्यंत वृद्धावस्था तक जो कुछ भी सुनता, बोलता एवं शब्दों के रूप में विचारों का आदान-प्रदान करता है, इन सबमें कहीं न कहीं हिंदी व हिंदी से जुड़ी अन्य भाषाओं व बोलियों से सम्मिश्रित भाषा का उपयोग करता है और शायद यही कारण है कि हिंदी जो आम हिंदुस्तानियों की एक पारिवारिक भाषा है, आज विश्व के 10 से अधिक देशों में अग्रणी भाषा के रूप में उभर रही है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण है कि अखिल विश्व के करीब 160 विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की भाषा भी है, अर्थात् हिंदी का परिवार बहुत बढ़ गया है.

हिंदी को पढ़ना आसान, बोलना आसान, समझना आसान, लिखना आसान है. अनुभव के आधार पर लिखने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि संवाद में हिंदी सर्वाधिक परिणामदायी रही है, कोई अन्य भाषा भारतवर्ष में इसका स्थान नहीं ले सकती.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा जैसे प्रतिष्ठित बैंक के ज़िम्मेदार सदस्य होने के नाते मेरा अनुरोध है कि भारत देश में जहां 46 करोड़ से अधिक नागरिकों के जन-धन खाते खोले गए हैं, ऐसे देश में बैंकिंग परिवार की भाषा भी हिंदी व हिंदी के प्रेमजाल में बुनी हुई भारतीय भाषाएं होनी चाहिए ताकि देश की सुसमृद्ध भाषा का परिवार और भी पुष्पित व पल्लवित हो सके.

कमलेश कुमार चौधरी
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख
जयपुर अंचल

"हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाएं देश के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक हैं."

आजादी के अमृत काल में एक नए भारत के निर्माण में हिंदी और भारतीय भाषाओं का योगदान महत्वपूर्ण होगा. भारत प्राचीन काल में विश्व गुरु के रूप में जाना जाता था. चिकित्सा के क्षेत्र में चरक संहिता और सुश्रुत द्वारा रचित ग्रंथों में चिकित्सा की सबसे उन्नत पद्धति का वर्णन है. यह सभी ग्रंथ संस्कृत में ही थे, जो हिंदी ही नहीं बल्कि भारतीय भाषाओं की जननी है. पाणिनि का ग्रंथ भी संस्कृत में था, जो आज गुणधर्मों के लिए विश्व प्रसिद्ध है.

अंग्रेजों ने हमारे ऊपर सिर्फ अंग्रेजी ही नहीं थोपी बल्कि हमारे सोचने की ताकत और मौलिक व स्वदेशिक सोच विचार की पद्धति को भी छीन लिया. यह वैज्ञानिक रूप से सत्य है कि मौलिक विचार सिर्फ मातृभाषा में ही उत्पन्न होते हैं इसीलिए तब तक हम भारत को उस नई ऊंचाई पर नहीं ले जा सकते हैं, जब तक हम अपनी भाषा और संस्कृति का प्रयोग न करें. हम सब जानते हैं कि जापान विश्व में कई क्षेत्रों में आगे है. वह सिर्फ अपनी जापानी भाषा की ही वजह से है. इसी तरह अन्य देश चाहे वह जर्मनी और फ्रांस हो सभी अपनी-अपनी भाषाओं का प्रयोग करते हैं.

आजादी के अमृत काल में जो नई शिक्षा नीति आई है, वह इसी उद्देश्य के लिए है. हम अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त कर नए भारत का निर्माण कर सकते हैं. मेरे विचार से यह स्वदेशी भाषाएं भारतीयों को आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक रूप से आत्मनिर्भर बना कर एक नए भारत का निर्माण करेंगी. जिसमें बच्चों, युवाओं, महिलाओं तथा सभी वर्गों का योगदान होगा.

आइए! हम सब मिलकर एक नए भारत-श्रेष्ठ भारत के निर्माण का संकल्प लें.

ब्रजेश कुमार सिंह
महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख
लखनऊ अंचल

"महानगरीय संस्कृति हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का संगम है."

वर्तमान समय में किसी भी महानगर में क्षेत्रीय भाषा का प्रभाव अधिक देखा जाता है. विभिन्न प्रदेशों/देश से आयी जनता महानगर में बसती है, साथ में अपनी भाषा/संस्कृति साथ लेकर आती है और महानगरीय भाषा के साथ समायोजित होती है. क्षेत्रीय भाषा में विभिन्न भाषाओं का संगम देखने को मिलता है. भाषा के साथ-साथ विभिन्न संस्कृति को भी महानगर अपनाता है, अभी ऐसा समय आया है कि उस महानगर की भाषा क्षेत्रीय भाषा या अन्य कोई विशिष्ट भाषा न रहकर मिली-जुली भाषा बन गयी है और यही कारण है कि किसी भी महानगर में हिंदी और क्षेत्रीय भाषा में संस्कृति का संगम देखने को मिलता है.

महानगरीय संस्कृति में हिंदी और क्षेत्रीय भाषा का आपस में मेल-मिलाप बहनों जैसा है. क्षेत्रीय भाषा का प्रभाव हिंदी पर अत्याधिक अनुकूल पाया गया है जिसके कारण क्षेत्रीय भाषा के प्रचलित शब्दों का संचार हिंदी में मुक्त रुप से हो रहा है, जैसे कि महाराष्ट्र में प्याज को 'कांदा' नाम से जाना जाता है, यदि किसी को 'मैं उब गया हूं', इसे मराठी क्षेत्रीय भाषा में 'मुझे कंटाला आया है', यह अक्सर कहा जाता है और यह आम तौर पर बोला जाता है. यदि हम बेहतर ग्राहक सेवा चाहते हैं तो हमें मराठी-हिंदी का संमिश्र रुप से इस्तेमाल करना होगा जिसके कारण हम ग्राहकों के साथ आत्मीयता के जरिए कारोबार विकास कर सकते हैं. हम कितना भी ऊपरी तौर पर अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करके अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने की कोशिश करेंगे लेकिन यह खोखलापन अधिक समय तक टिक नहीं सकता है और इसका यह मुखौटा अधिक समय तक नहीं रहेगा. आज महानगरीय संस्कृति में हिंदी और क्षेत्रीय भाषा की स्थिति अधिक मजबूत दिखाई दे रही है और इसका विस्तार तेजी से हो रहा है.

मनीष कौड़ा
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, मुंबई अंचल

"भारत के कई प्रदेश में एक साथ कई भाषाएं फल-फूल रही हैं. भारत की बहुभाषिकता देश को अलग पहचान दिलाती है."

भारत में भाषाई विभिन्नता इतनी है कि लोग यह कहते हैं, "कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बदले बानी." भारत की खूबी यही है कि यहां बहुभाषिकता है, हम एक दूसरे के साथ अपनी-अपनी भाषा और अपनी-अपनी संस्कृति के माध्यम से जुड़े हुए हैं. हर भाषा के अपने संस्कार हैं और यही भाषाई संस्कार हर भारतीय को विश्वभर में अलग पहचान दिलाते हैं. मेरा मानना है कि बहुभाषिकता ही हमारी ताकत और पहचान है.

भारत जैसे बहुभाषी देश में तो हमारा किसी एक भाषा के सहारे काम चल ही नहीं सकता. हमें अपनी बात बाकी लोगों तक पहुंचाने के लिए और उनके साथ संवाद करने के लिए एक भाषा से दूसरी भाषा के बीच व्यवहार करना ही पड़ता है. यदि हम हिंदी और मराठी दोनों भाषाओं का मिश्रित रूप में मुंबइया जुबान की बात करें तो इस जुबान में होने वाले संवाद की मिठास और संप्रेषण की सहजता देखने लायक है. उसी तरह हिंदी और उर्दू का मिलाप हिन्दुस्तानी भाषा के रूप में हमें जोड़ता है. इन मिश्रित भाषाओं की अपनी मिठास और अपना मजा है जो कि हमारे दिलों को भी जोड़ने का कार्य करती है.

भारत अपने आप में वैश्विक संस्कृति को समाहित किए हुए है. भारत के प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र की अपनी भाषा एवं संस्कृति है. विभिन्न संस्कृति और साहित्य की मिलीजुली संस्कृति ने आदिकाल से भारत को विश्वगुरू के रूप में स्थापित किया है. भारत की बाहुभाषिकता ही इसे विश्व में अन्य देशों से अग्रणी और अलग साबित करती है.

भारतीय अध्यात्म और साहित्य की कल्पना लोक भाषा के बिना संभव नहीं है. भारतीय बहुभाषिकता ने भारतीय संस्कृति को रंग प्रदान की है, यह इन्द्रधनुष विभिन्न लोक साहित्य और कला के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व को रंग प्रदान किए हुए है. जिसके रंग अनेक हैं किन्तु भारतीय अनेकता में एकता को दर्शाता है.

विजय कुमार बसेठा
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, राजकोट अंचल

''ग्राहक संबंधों की भाषाएं के रूप में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएं ग्राहक केंद्रीयता को परिपुष्ट करेंगी.''

हमारे ग्राहकों से हमारा संबंध उनकी वित्तीय जरूरतें पूरा करने तक सीमित है. बैंक द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं/सुविधाओं की गुणवत्ता ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाती हैं. ग्राहकों तक सेवाएं/ सुविधाएं किसी-न-किसी भाषा में पहुंचती हैं. अतः जिस भाषा में ग्राहक स्वयं को सहज महसूस करे या जो भाषा उन्हें स्वीकार्य हो, हमें उसी भाषा में ग्राहक से संवाद करना चाहिए. ग्राहक की पसंदीदा भाषा में संवाद स्थापित करने से ग्राहक से संबंध प्रगाढ़ होने की संभावना प्रबल रहती है. इस संदर्भ में हम हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व बखूबी समझ सकते हैं. मुझे लगता है कि खाता खोलते समय हमें ग्राहकों से भाषा के संबंध में भी उसकी पसंद जानने की कोशिश करनी चाहिए अर्थात् बैंक से प्राप्त होने वाले संदेशों/संप्रेषणों की भाषा क्या हो तथा बैंक के कर्मचारी उनसे किस भाषा में बात करें, ग्राहक द्वारा इसका स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए. यदि बैंक अपने सभी संप्रेषणों में ग्राहक की पसंदीदा भाषा को स्थान देता है तो यह बहुत बड़ा कदम होगा और यह हमारे बुनियादी मूल्य ग्राहक केंद्रीयता को परिपुष्ट करेगा.

अमित तुली
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, नई दिल्ली अंचल

''तकनीक के क्षेत्र में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग व्यावहारिक होना चाहिए.''

भाषा किसी भी संस्कृति के महत्वपूर्ण भागों में से एक है. हम भारत के सबसे बड़े बैंकों में से एक हैं, हमें अपने ग्राहकों को उनकी पसंदीदा भाषा में सभी टचप्वाइंट पर विशेष रूप से डिजिटल उत्पादों में हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में सेवाएं प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए. बैंक द्वारा विशेष रूप से विकसित हो रहे डिजिटल उत्पादों में विशेषत: हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं का विकल्प होना चाहिए. इसके अलावा, तकनीकी क्षेत्र में उपयोग की जाने वाली भाषा सरलता और सहजता के साथ-साथ चित्रों (आइकनों) के साथ होनी चाहिए. हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाएं तकनीकी प्लेटफार्मों के अनुकूल होने के दौरान सभी प्लेटफार्मों पर आसानी से व्यवहारिक भाषा के रूप में उपलब्ध होनी चाहिए.

मिनी टी. एम.
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, पुणे अंचल

''गैर-हिंदी प्रदेशों में हिंदी की स्थिति अच्छी है.''

मैं मूलत: तमिलनाडु राज्य से हूं. मुझे बचपन में स्कूल से हिंदी सीखने का अवसर नहीं मिला. बैंक में आने के बाद इसी राज्य में कार्य कर रही थी. पदोन्नति के बाद मुझे अहमदाबाद में कार्य करने का अवसर मिला और वहां सारे लोग हिंदी में बात करते थे. खुशी की बात है कि मैंने अन्य स्टाफ के सहयोग और अपनी रुचि के कारण छ: महीनों के अंदर ही हिंदी बोलना शुरू कर दिया. हिंदी बहुत ही सरल, मीठी एवं सुबोध भाषा है. हिंदी भाषा सुनने में अच्छी लगती है. अब, मैं हमेशा अपने स्टाफ-सदस्यों से बैठकों में हिंदी में वार्तालाप करती हूं. बैंकिंग सेवा क्षेत्र से संबद्ध है, बैंक में हम हिंदी में आसानी से अपने ग्राहकों तक अपने उत्पादों की जानकारी दे सकते हैं. ग्राहक सेवा प्रदान करने में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है. डिजिटलीकरण के बाद हिंदी की गति और तेज हो गयी है. टीवी और सिनेमा के माध्यम से आजकल गैर-हिंदी प्रदेश में हिंदी का खूब प्रचार-प्रसार हो रहा है. मेरी दृष्टि में हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है.

गायत्री आर
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख
मंगलुरु अंचल

''ग्राहक सेवा में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएं एक सेतु का कार्य करती हैं.''

मेरा ऐसा मानना है कि भारतीय भाषाएं व्यवसाय विकास एवं ग्राहक वर्ग के बीच एक सेतु का कार्य करती हैं. बैंकिंग क्षेत्र एक सेवा प्रदाता क्षेत्र है. ग्राहकों के साथ कनेक्ट करने के लिए उनको अपनेपन का एहसास कराना जरूरी है जिससे ग्राहक हमारे बैंक द्वारा दी जा रही उत्पादों एवं सेवाओं की ओर आकर्षित हों. जब हमारे मौजूदा ग्राहक बैंक के उत्पादों की अनुशंसा दूसरे ग्राहकों को करेंगे तभी हम सही मायने में अपने ग्राहक सेवा के उद्देश्य को सिद्ध कर पाएंगे. हमारे इसी उद्देश्य की प्राप्ति की संवाहिका हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाएं होंगी.

जब हम भारतीय भाषा का उपयोग करते हैं तो हमारी संवाद शैली भी बेहतर होती है और अपने उत्पाद की विशेषताओं को ग्राहकों तक प्रभावी तरीके से पहुंचा सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप हम एक गुणवत्तापरक व्यवसाय कैनवास करने के साथ-साथ ग्राहक से एक चिर स्थायी संबंध भी स्थापित कर सकते हैं.

हिंदी भाषा से इतर क्षेत्रों में भी अब हिंदी ने अपना स्थान बना लिया है उदाहरण के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र अथवा दक्षिण क्षेत्र का व्यक्ति जब शाखा में आते हैं तो वे अपने कार्यों के लिए हिंदी भाषा को ही माध्यम बनाते हैं जो भारतीय भाषाओं के बीच हिंदी के महत्व को रेखांकित करती है.

सोनाम टी. भूटिया
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, पटना अंचल

''भावों की अभिव्यक्ति में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं की अहम भूमिका है.

सर्वप्रथम मैं आप सभी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं कि 'बॉब-अभिव्यक्ति' ऐप के माध्यम से पत्रिका डिजिटल रूप में प्राप्त हो रही है और इसे पढ़कर मुझे प्रसन्नता भी हुई. यह हमारे स्टाफ सदस्यों के लिए भी प्रेरणा स्त्रोत है. जहां तक हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में भावों की अभिव्यक्ति की बात है तो सभी को अपनी क्षेत्रीय भाषाओं से लगाव होता है और हिंदी उसके समकक्ष एक बड़े सहायक के रूप में खड़ी रहती है. यदि आप देखें तो पाएंगे कि बंगाल एक ऐतिहासिक राज्य रहा है चाहे अंग्रेजों के समय का व्यापार- केंद्र हो, चाहे अंग्रेजों की शिक्षागत नीतियों का सूत्रपात हो, चाहे नवजागरण काल का प्रादुर्भाव हो, या फिर अति-विशिष्ट महानायकों का अवतरण ही हो, हर क्षेत्र में कोलकाता शहर की सांस्कृतिक विरासत असीम है. हिंदी की पहली पत्रिका 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन भी कोलकाता से ही प्रारम्भ हुआ था. ऐसी सांस्कृतिक धरोहर वाले राज्य में ही भारतीयता का विकास हो सकता है. अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखने की सबसे महत्वपूर्ण विधि होती है - अपनी भाषा और अपनी भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखना. वहीं भाषाओं के प्रयोग पर एक नजर डालें तो हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं धीरे-धीरे हाशिये पर जा रही हैं और अंग्रेजी का चारो ओर बोलबाला है. आधुनिकीकरण के नाम पर मातृभाषाएं कुर्बान हो रही हैं. उदाहरण स्वरूप बुनियादी शिक्षा प्रणाली को देखें तो पाएंगे कि विद्यालय में अंग्रेजी को वरीयता दी जा रही है वहीं भारतीय भाषाओं को तीसरी भाषा के रूप में भी स्वीकार करने से कतरा रही हैं. इसका दूरगामी परिणाम यह होगा कि भविष्य में सामाजिक परिवेश भी हिन्दी/क्षेत्रीय भाषाओं को स्वीकार करने में शर्मिंदगी महसूस करेंगे. मेरा मानना है कि अपनी भाषा को स्वीकार करें, उस पर गर्व करें और आगे आने वाली पीढ़ियों को सजग करें.

भावों का सबसे सुगम और सरल माध्यम अपनी भाषा में वार्तालाप करना है और यह हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी है कि हम अपनी बोली एवं व्यवहार में अपनी मातृभाषा का प्रयोग जरूर करें. मुझे लगता है अपने कार्यों में क्षेत्रीय भाषाओं का भी प्रयोग करें तो हमें परिणाम शत-प्रतिशत प्राप्त होंगे. यूं कहा जाए कि मातृभाषा से शुरू होने वाला सफर एक दिन राजभाषा के प्रयोग पर जाकर प्रतिफलित होगा-

भारतेन्दु जी की पंक्तियां एकदम सही ठहरती हैं-
निज भाषा उन्नति अहे - सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय के शूल

समग्र रूप में कहें तो यदि हम भावों की अभिव्यक्ति अपनी मातृभाषा या हिंदी में करें तो हमें बेहतर से बेहतरीन परिणाम प्राप्त होंगे.

देबब्रत दास
महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, कोलकाता अंचल

''हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएं एनआरआई ग्राहकों को बैंक से जोड़ने में सहायक हैं.''

भाषायी संवाद से ही व्यक्ति परस्पर अपने विचारों, सोच एवं भावनाओं का आदान-प्रदान कर पाता है. दैनिक जीवन में भाषा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करती हैं एवं उसके निर्णय लेने की क्षमता में मुख्य भूमिका निभाती है क्योंकि वह बड़ी ही सहजता से सभी पहलुओं पर विचार कर पाती हैं. यही विश्वसनीय संवाद आजकल व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा में रणनीति बनाने में मुख्य भूमिका निभाता है. इसी कारण वर्तमान में व्यावसायिक प्रतिष्ठानों ने व्यवसाय वृद्धि करने हेतु अपने विज्ञापनों में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं को अंगीकार किया है. एक शीतल पेय कम्पनी ने जैसे ही भारतीय भाषा में अपना विज्ञापन 'ये दिल मांगे मोर' प्रचारित किया वैसे ही उसके उत्पादों की बिक्री कई गुना बढ़ गई.

यद्यपि अंग्रेजी भाषा अंतराष्ट्रीय व्यवसाय में व्यावहारिक रूप से नितांत आवश्यक है परंतु हिंदी भाषा भी व्यावसायिक वृद्धि हेतु उतनी ही महत्वपूर्ण हैं. हिंदी भाषा परस्पर संवाद द्वारा ग्राहकों से एक सांस्कृतिक जुड़ाव स्थापित करती जिससे ग्राहक स्वयं को बैंक के साथ न सिर्फ एक खाताधारक के रूप में जुड़ा हुआ महसूस करता है वरन वह स्वयं को बैंकिंग परिवार का सदस्य महसूस करता है. इसी विश्वास के साथ ही आज भी बैंक से कई परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी जुड़े हैं तथा बैंक की व्यावसायिक वृद्धि में निरंतर अपना योगदान दे रहे हैं.

यहां यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि आज भी वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है तथा 615 मिलियन व्यक्ति हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं. साथ ही, के.पी.एम. जी-गूगल अध्ययन के आधार पर लगभग 80% हिंदी भाषी व्यक्ति इन्टरनेट का उपयोग करते हैं. एन.आर. आई व्यवसाय वृद्धि हेतु ग्राहकों की रुचि और उनकी प्राथमिकताओं को समझना आवश्यक है. हिंदी भाषा एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाएं यह दायित्व बखूबी निभाती हैं. क्यूंकि ग्राहक अपनी बैंकिंग आवश्यकताओं के बारे में अपनी भाषा में ही सहजता से विस्तृत चर्चा कर पाते हैं. एक सामान्य अध्ययन से यह सिद्ध हुआ है कि 10 में से 7 उपयोगकर्ता वेबसाइट पर अपनी क्षेत्रीय भाषा में विजिट कर ख़रीदारी करता है. इसी कारण से ही वर्तमान में बैंक की वेबसाइट अंग्रेजी भाषा के साथ हिंदी भाषा में भी लोकप्रिय हैं.

इसी प्रकार प्रवासी भारतीय व्यवसाय वृद्धि हेतु ग्राहकों के सुझावों एवं शिकायतों का समय पर निस्तारण करना भी आवश्यक है. ग्राहक अपने सुझावों एंव शिकायतों को अपनी मूलभाषा में भली भांति व्यक्त कर पाते हैं. इसी कारण बैंक ने कॉल सेंटर एवं वैकल्पिक वितरण चैनल में भलीभांति हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को समाहित किया है.

हमने यहां संयुक्त अरब अमीरात टेरीटरी में देशीय सीमा से परे एनआरआई ग्राहकों को बैंक से जोड़ने हेतु हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में कई प्रयास किए हैं जिसमें मुख्यत: 'प्रवासी भारतीय ग्राहक बैठक', 'भारतीय वाणिज्य दूतावास अधिकारी से संवाद', 'दुबई चेम्बर ऑफ कॉमर्स' एंव 'ग्राहक जागरूकता अभियान-इंडियन एसोशियसन', शारजाह व अन्य कई प्रतिष्ठानों में हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में कार्यक्रम आयोजित करना शामिल है. इन सब प्रयासों से बैंक कई प्रवासी भारतीय ग्राहकों को जोड़कर व्यवसाय वृद्धि में सफल रहा है. हमने टेरिटरी स्तर पर ग्राहकों को धोखाधड़ी से बचाने हेतु एवं इसके बचाव के उपायों पर ग्राहकों की जागरूकता बढ़ाने हेतु सभी ग्राहकों को अंग्रेजी एवं अरबी भाषा के अतिरिक्त हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में 'जागरूकता सन्देश' भेजना एवं शाखा स्तर पर उनका प्रदर्शन भी सुनिश्चित किया है. इसके लिए कई प्रवासी भारतीय ग्राहकों ने बैंक के प्रयासों को सराहा है.

इस प्रकार बैंकिंग व्यवसाय में भाषायी संवाद आंतरिक ग्राहकों (बैंक कर्मचारी) को एक सूत्र में बांधने का प्रयास करता है साथ ही बाह्य ग्राहकों (बैंक ग्राहक) को बैंक से जोड़ने का हर संभव प्रयास करता है जोकि हिंदी भाषा व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं से ही सम्भव हो पाया.

अंत में यह कहना चाहूंगा कि प्रवासी भारतीय ग्राहकों को बैंक से जोड़ने में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं.

धन्यवाद एवं आभार.

निशांत रंजन
मुख्य कार्यपालक एवं टेरीटरी प्रमुख
संयुक्त अरब अमीरात परिचालन, दुबई

''विदेशों में भी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रसार की अपार संभावनाएं सृजित हुई हैं.''

भाषा हमारे दैनिक जीवन में संवाद के माध्यम के सामानांतर अंतर्राष्ट्रीय वित्त, बैंकिंग तथा व्यापार से भी जुड़ी हुई है. जब से बाज़ारोन्मुखी अर्थव्यवस्था का उदय हुआ है, तब से वस्तुओं एवं सेवाओं का मुक्त प्रवाह भी संभव हुआ है. शायद इसी के मद्देनज़र संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2019 में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की विषयवस्तु को 'देशज भाषाएं, सतत् विकास, शांति की स्थापना और समाधान' रखा था. इससे विदेशों में हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रसार की अपार संभावनाओं का खुला हुआ द्वार और मजबूत हो गया. संयुक्त राष्ट्र संघ के इस कदम से पूर्व ही विश्व के 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्यापन होता रहा है जो प्रौद्योगिकी के वर्तमान दौर में प्रगति के स्वरुप से उत्पन्न प्रतियोगिता के साथ-साथ और भी विस्तृत होता गया. विश्व की अन्य भाषाओं के साथ-साथ हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएं भी इस प्रतिस्पर्द्धा से प्रभावित हुई हैं. आज अकेले अमेरिका में 38 प्रतिशत डॉक्टर तथा 12 प्रतिशत वैज्ञानिक, 34 प्रतिशत माइक्रोसॉफ्ट कर्मचारी, 28 प्रतिशत आईबीएम कर्मचारी, 17 प्रतिशत इंटेल वैज्ञानिक, 13 प्रतिशत ज़ेरोक्स कर्मचारी तथा प्रवासियों में 12 प्रतिशत भारतीय हैं. इसी प्रकार कनाडा, इंग्लैंड तथा दक्षिणी अफ्रीका, मलेशिया, फिजी, यूनाइटेड अरब अमीरात तथा अन्य देशों में भारतीयों की मौजूदगी से हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के प्रसार की विपुल संभावनाओं को सहज भाव से परिकल्पित किया जा सकता है. भारत की भाषाएं दुनिया में सबसे समृद्ध, सबसे वैज्ञानिक, सबसे सुंदर और सबसे अभिव्यंजक भाषाओं में से हैं. इन भाषाओं में लिखी गई फिल्म, संगीत और साहित्य भारत की राष्ट्रीय पहचान है. विश्व में सभी अग्रणी देश अपनी भाषा की वजह से ही आगे बढ़े हैं. वैश्वीकरण और कंप्यूटर के युग में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का पलड़ा भारी है. अतः नई अर्थव्यवस्था के दौर में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार की असीमित संभावनाएं निहित हैं.

राज कुमार मीना
प्रबंध निदेशक
बैंक ऑफ़ बड़ौदा (यूगांडा) लिमिटेड
प्रधान कार्यालय, कंपाला (यूगांडा)

''मॉरीशस में भी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का भविष्य बेहतर है.''

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह जहां भी रहता है, एक दूसरे से संप्रेषण हेतु किसी न किसी माध्यम को ढूंढ लेता है और संप्रेषण का सबसे प्रमुख माध्यम भाषा है. देश हो या विदेश मनुष्य अपनी मातृभाषा से अपने लगाव को कभी छोड़ नहीं पाता. विश्व में कई भाषाएं बोली जाती हैं, जिनमें हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का अपना महत्व है और यह महत्व तब ज्यादा समझ में आता है जब कोई भारतीय किसी दूसरे भारतीय से मिलता है. भारतीयता को जोड़ने का सबसे प्रमुख कार्य भाषाएं ही करती हैं.

हिंदी और उसके साथ अन्य भारतीय भाषाएं 1870 के आसपास मॉरीशस पहुंची. तब से लेकर अब तक उन्हीं लोगों के वंशजों के कारण हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का प्रचार-प्रसार यहां बड़े स्तर पर होता रहा. मॉरीशस में बड़ी संख्या में लोग हिंदी का प्रयोग अपने दैनिक जीवन में सामाजिक, व्यवसायिक तथा धार्मिक स्तर पर करते हैं. आज मॉरीशस में भारत के कई प्रांतों के लोग रहते हैं. केवल हिंदी ही नहीं बल्कि बांग्ला, तमिल, तेलुगू, गुजराती आदि भाषाओं का प्रयोग भारतीयों के बीच बहुत होता है. सांस्कृतिक संगोष्ठी हो या धार्मिक कार्य व्यवसायिक प्रयोजन हो या मनोरंजन लगभग सभी जगह भारतीय भाषाओं का प्रयोग होता है. मॉरीशस में शिक्षा तथा मीडिया के क्षेत्र में भी हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के लिए बहुत कार्य हो रहा है. यहां तक की सरकारी स्कूलों एवं कॉलेजों में हिंदी भाषा की शिक्षा अवश्य दी जाती है. मनोरंजन के क्षेत्र में यहां हिंदी गानों एवं फिल्मों का बहुत महत्व है. भारतीय फिल्मों एवं भोजपुरी गानों के प्रति लोगों की विशेष रूचि रहती है. प्रवासी भारतीय ही नहीं बल्कि मॉरीशस के मूलनिवासी भी इन फिल्मों तथा गानों को बहुत पसंद करते हैं और कहीं न कहीं इनसे एक अलग जुड़ाव महसूस करते हैं.

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, समाचार एवं एफ. एम. चैनलों का प्रसारण हिंदी में किया जाता है. हाल ही में 'विश्व हिंदी सचिवालय' का उद्घाटन मॉरीशस में किया गया जो यह दर्शाता है कि हिंदी को लेकर कितनी रूचि यहां लोगों में मौजूद है.

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मॉरीशस में जो प्रवासी भारतीय रहते हैं, ज्यादातर लोग दैनिक कार्यों के लिए अपनी भाषा का ही प्रयोग करते हैं. व्यावसायिक स्तर पर ही नहीं बल्कि भावना के स्तर पर भी हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मॉरीशस का जुड़ाव आंतरिक है. हिंदी तथा भोजपुरी के साथ प्रवासी ही नहीं बल्कि मॉरीशस के मूल निवासियों का जो लगाव दिखाई दे रहा, आने वाले समय में यह तय है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का भविष्य यहां उज्जवल है.

दिवाकर पी. सिंह
वाइस प्रेसिडेंट एवं टेरिटरी प्रमुख
बैंक ऑफ़ बड़ौदा, मॉरीशस परिचालन

"हिंदी भारतीयता की वाहक है."

तंज़ानिया, केन्या एवं अन्य पूर्व अफ्रीकी देशों में भारतीय मूल के लोगों का प्रवास लगभग 150 वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ. ब्रिटिश आधिपत्य के कारण गुजरात और पंजाब प्रांतों से प्रारम्भ में भारतीय इन देशों में लाए गए. परन्तु अपनी उद्यमिता के कारण उन्होंने शीघ्र ही एक प्रबल आर्थिक एवं संपन्न वर्ग के रूप में अपना स्थान बना लिया. तन्गानिका एवं ज़ांज़ीबार द्वीप समूह को समग्र रूप से हिन्द महासागर के पश्चिम में स्थित तंज़ानिया देश के रूप में जाना जाता है. यहां भारतीय मूल के करीब पचास हज़ार एवं दस हज़ार अप्रवासी भारतीय निवास करते हैं.

विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों से आने के वावजूद नि:संदेह हिंदी सभी भारतीयों को स्वाभाविक रूप से एक सूत्र में पिरोने का काम वर्षों से करती रही है. वस्तुतः भारत से कहीं ज्यादा विदेशों में हिंदी भारतीयों को जोड़ने वाली भाषा के रूप में योगदान दे रहा है. दक्षिण, पश्चिम एवं अन्य हिंदीतर भाषी क्षेत्रों से आने के बावजूद, हिंदी आपसी संवाद के लिए एक कॉमन भाषा के रूप में प्रमुखता से प्रयोग में लायी जाती है. यह बहुत स्वाभाविक भी है क्योंकि, विभिन्न भाषा क्षेत्रों से होने के बावजूद हिंदी ही है जो सभी को भारतीय होने का एहसास दिलाती है. मेरा यह अनुभव रहा है कि विदेशों में आयोजित कार्यक्रमों में जिनका आयोजन विभिन्न अलग-अलग भाषा समुदायों द्वारा किया जाता है परन्तु यह सभी कार्यक्रम मूलतः हिंदी में ही आयोजित किए जाते हैं. हाल ही में आज़ादी के 75 वर्ष हेतु आयोजित कई समारोहों में जिनका आयोजन केरल एवं हिंदीतर भाषी क्षेत्रों के संगठनों द्वारा किया गया परन्तु कार्यक्रम हिंदी में ही आयोजित किए गए.

मेरा यह सुखद अनुभव रहा कि सुदूर दक्षिण प्रान्त के लोग भी हिंदी में अत्यंत स्पष्टता से संवाद करते हैं बल्कि यह कहा जाए कि भारतीयों को विदेश में भारतीयता का एहसास दिलाने वाली एक मात्रा भाषा हिंदी ही है. नि:संदेह हिंदी का महत्व विदेशी भूमि पर रह रहे लोगों के लिए कहीं ज्यादा है. इसका प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता नहीं होती. यह इस स्वतः स्वाभाविक रूप से ग्राह्य भाषा रूप में प्रयोग में लायी जा रही है. विदेशों में भारतीय पासपोर्ट अथवा भारतीय ओसीआई कार्ड, भारतीय संस्कृति जैसे खान-पान, पहनावा आदि एवं भाषा के रूप में हिंदी ही भारतीयता का कॉमन वाहक है.

आदित्य नारायण सिंह
प्रबंध निदेशक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा (तंजानिया) लि. तंजानिया

"भारतीय भाषाएं एनआरआई ग्राहकों को बैंक से जोड़ने में सहायक हैं."

ग्राहक सेवा में भाषाओं का बहुत महत्व है और सेवा क्षेत्र होने के नाते बैंकिंग में भाषाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है.

विदेशी शाखाओं में, अधिकांश एनआरई ग्राहक अंग्रेजी भाषा में सेवा प्राप्त करना पसंद करते हैं.

तथापि, उन्हें जब भी हिंदी या क्षेत्रीय भाषा में संवाद स्थापित करने का अवसर मिलता है, तो वे इसे प्रसन्नता से स्वीकार करते हैं और उसी भाषा में बातचीत करना शुरू कर देते हैं. वे सेवा प्रदान करने वाले कर्मचारियों के साथ निकटता, सुविधा और सहजता महसूस करते हैं.

भाषा लोगों को जोड़ती है. इससे संबंध और गहरे होते हैं, जिसकी वजह से संवाद स्थापित करना सहज हो जाता है. जब हमारे कर्मचारी उनकी भाषा में उन्हें सेवा प्रदान करने का विकल्प देते हैं, तो इससे हम उनके और करीब आ जाते हैं. अपनी भाषा में बात करने से किसी भी व्यक्ति को अतिरिक्त आनंद की अनुभूति होती है.

कई विदेशी कार्यालय रिटेल व्यवसाय करते हैं, जिसमें नए व्यवसाय को कैनवास करने हेतु अपनी राष्ट्रीय/क्षेत्रीय भाषाओं में बात करना लाभकारी होता है. उदाहरण के रूप में हम फिजी को ले सकते हैं, जहां कई ग्राहक भोजपुरी को अपनी भाषा के रूप में उपयोग कर रहे हैं. ऐसे स्थान पर ग्राहक से जब कोई भी कर्मचारी भोजपुरी में बात करेगा तो उनसे बड़ी ही सहजता से संबंध स्थापित करने में सफल होगा.

भारतीय बैंक होने के नाते, हम रिसेप्शन पर 'हम हिंदी में वार्तालाप का स्वागत करते हैं' का बोर्ड प्रदर्शित करते हैं. इससे हमारे ग्राहकों को, यदि वे चाहें तो, हिंदी में बातचीत करने की सुविधा का विकल्प चुन सकते हैं.

रवीश कुमार
मुख्य कार्यपालक
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
सिडनी शाखा, ऑस्ट्रेलिया

ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के समग्र विकास में एमएसएमई उद्यमों का योगदान

प्रेम प्रियदर्शी
मुख्य प्रबंधक
ईस्ट मरेडपल्ली शाखा, हैदराबाद मेट्रो क्षेत्र

आजादी का अमृत महोत्सव प्रगतिशील भारत के 75 वर्ष पूरे होने और हमारी उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को याद करने और उत्सव मनाने के लिए भारत सरकार की ओर से की जाने वाली एक अहम पहल है. यह महोत्सव आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की भावना से प्रेरित है और सभी भारतीय को समर्पित है, जिन्होंने न केवल भारत को उसकी विकास यात्रा में आगे लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है.

आत्मनिर्भर भारत की ओर कदम बढ़ाने में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग (एमएसएमई) क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है. एमएसएमई भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है. एमएसएमई को ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों के औद्योगिकीकरण में योगदान देने के लिए जाना जाता है. वे प्रमुख व्यवसायों की तुलना में कम लागत पर पर्याप्त रोजगार के अवसर प्रदान करके राष्ट्रीय आय और धन का समान वितरण सुनिश्चित करते हैं. हम यह कह सकते हैं कि लगभग 130 करोड़ की आबादी वाले भारत जैसे देश में एमएसएमई क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. भारतीय अर्थव्यवस्था उद्यमिता सृजन के माध्यम से पनपती है, जो अर्थव्यवस्था को गति देने वाले घटकों में से एक है. एमएसएमई उद्यमिता को बढ़ावा देता है और रोजगार के बड़े अवसर का निर्माण करता है. यह अतिरिक्त खेतिहर मजदूरों को अपने में समाहित करने के कारण ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों में प्रच्छन्न बेरोजगारी की समस्या कम करने में सहायक है. कृषि के बाद रोजगार सृजन के मामले में एमएसएमई का दूसरा स्थान है. एमएसएमई सहायक इकाइयों के रूप में बड़े उद्योगों का पूरक भी है. इस प्रकार सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग स्वरोजगार के माध्यम से लोगों को आर्थिक गतिविधियों से जोड़ने की संभावनाएं बनाए रखते हैं और ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के पूरे परिस्थितिक तंत्र को बनाए रखने में योगदान करते हैं. एमएसएमई क्षेत्र भारत की विरासत, आर्थिक मॉडल और उत्पादों एवं सेवाओं के लिए महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला का एक हिस्सा है. इस क्षेत्र को रोजगार निर्माता माना जाता है और यह ग्रामीण पिछड़े एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के बड़े पैमाने पर रोजगार और औद्योगीकरण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

भारत में एमएसएमई क्षेत्र के योगदान पर कुछ तथ्यों को उजागर करना चाहूंगा. भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में एमएसएमई क्षेत्र की लगभग 6.3 करोड़ इकाइयों का विशाल संजाल है, जिसमें से लगभग 20% एमएसएमई इकाइयां भारत के ग्रामीण इलाकों में स्थित है. इस क्षेत्र के भीतर तीन क्षेत्रों में से प्रत्येक, अर्थात्- व्यापार, विनिर्माण और अन्य सेवाओं में कुल रोजगार का लगभग एक तिहाई रोजगार है. कुल एमएसएमई का लगभग 50% ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत है और कुल रोजगार का 45% रोजगार प्रदान करता है.

दिलचस्प बात यह है कि एमएसएमई क्षेत्र में उत्पादन के 97% रोजगार में सूक्ष्म उद्यम का योगदान है जो ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों की हिस्सेदारी को दर्शाता है.

आधुनिक भारत के ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के विकास में स्टार्ट-अप का भी महत्वपूर्ण योगदान है. स्टार्ट-अप ग्रामीण युवाओं के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं और मुख्यधारा के व्यवसायिक क्षेत्रों से इतर आधुनिक भारत को आकार देकर व्यवसाय की राह बदल रहे हैं.

ग्रामीण और अर्धशहरी भारत में सूक्ष्म एवं लघु उद्योग सदियों से पारंपरिक कौशल के रूप में मौजूद हैं. लघु एवं मध्यम उद्यम (एसएमई) क्षेत्र में ग्रामीण उद्यमिता के लिए बहुत अधिक गुंजाइश है जो ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों और बेरोजगारों के लिए रोजगार एवं आय प्रदान करने में प्रमुख भूमिका निभाता है. हमें यह भी समझना चाहिए कि जैसे-जैसे ग्रामीण आबादी बढ़ेगी, भूमि एवं कृषि पर दबाव भी बढ़ता रहेगा और कृषि की आर्थिक व्यवहार्यता घटेगी. ऐसी परिस्थितियों में एमएसएमई ग्रामीण रोजगार के लिए एक वैकल्पिक मार्ग प्रदान कर सकते हैं .

हमारे देश की सरकार एमएसएमई क्षेत्र की शक्ति को पहचानती है, इसलिए एमएसएमई को बढ़ावा देने के लिए बार-बार विभिन्न योजनाएं और नीतियां विकसित की गई हैं. इन्हें बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं कार्यक्रम लागू की जाती रही हैं एवं कई घोषणाएं की गई हैं जिनमें से एमएसएमई को कच्चा माल खरीदने एवं परिचालन संबंधी देनदारियों को पूरा करने और व्यवसाय को फिर से शुरू करने के लिए तीन लाख करोड़ का सांपार्श्विक मुक्त स्वचालित (कॉलेटरल फ्री) ऋण एवं क्षेत्र को अधिकतम लाभ देने के लिए एमएसएमई परिभाषा में संशोधन आदि

प्रमुख हैं. एमएसएमई मंत्रालय और उसके संगठनों द्वारा मुख्यतः ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के विकास के लिए क्रियान्वित कई योजनाओं में से प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएम ईजीपी), सूक्ष्म और लघु उद्यम के लिए ऋण गारंटी योजना (सीजीटीएमएसई), प्रधानमंत्री मंत्री मुद्रा योजना, रोजगार युक्त गांव, नवोन्मेषी ग्रामीण उद्योग और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एस्पायर योजना, कौशल उन्नयन और महिला केयर योजना, ग्रामीण क्षेत्रों के लिए महात्मा गांधी संस्थान (एमजीआईआरआई), ग्रामोद्योग विकास के तहत अगरबत्ती निर्माण परियोजना, मधुमक्खी पालन गतिविधि, मिट्टी के बर्तन बनाने की गतिविधि आदि चलाई जा रही हैं, जिसका सबसे ज्यादा लाभ ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में पड़ने वाली एमएसएमई इकाइयों को मिला है. इन योजनाओं के माध्यम से केंद्र सरकार ने उद्यमिता को बढ़ावा देने, नई नौकरियां सृजित करने और बेरोजगारी को कम करके एमएसएमई क्षेत्र की मदद करने का प्रयास किया है. यह योजना नवोन्मेषी व्यावसायिक विचारों को विशेष प्राथमिकता देती है और उनके विकास को सुगम बनाती है.

साथ ही साथ सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग मंत्रालय ने सामाजिक संबंधों को हल करने के लिए एवं महिलाओं के विकास के लिए कम लागत वाले उत्पादों और सेवाओं के इर्द-गिर्द सामाजिक उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एक नेटवर्क उद्यम सखी पोर्टल लांच किया है जो लगभग 8 मिलियन भारतीय महिलाओं (जिनमें की एक अच्छी आबादी ग्रामीण एवं अर्धशहरी महिलाओं की है) की जरूरतों को पूरा करता है, जिसमें इसके माध्यम से उद्यमिता सीखने के उपकरण उष्मायन सुविधा, धन उहगाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, सलाहकार प्रदान करने आदि के अवसर प्रदान करता है.

हमारे देश की सरकार यह भी सुनिश्चित करती है कि इन कार्यक्रमों और योजनाओं का लाभ सभी सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को समय पर पहुंचे.

ग्रामीण और अर्धशहरी भारत में सूक्ष्म और लघु उद्योग सदियों से पारंपरिक कौशल के रूप में मौजूद हैं. हाल ही में, ग्रामीण उद्यमिता एक गतिशील अवधारणा के रूप में उभरी है. लघु एवं मध्यम उद्यम (एसएमई) क्षेत्र में ग्रामीण उद्यमिता के लिए बहुत अधिक गुंजाइश है जो ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों

और बेरोजगारों के लिए रोजगार और आय प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. अधिशेष ग्रामीण श्रम के मुद्दे का लाभ उठाया जा सकता है. हाल के वैश्विक महामारी के चलते गांवों की ओर प्रेरित रिवर्स ग्रामीण प्रवास ने ग्रामीण क्षेत्रों में श्रम की अधिक आपूर्ति की स्थिति को जन्म दिया है. नई ग्रामीण एमएसएमई इकाइयों के रूप में उद्यमशीलता की पहल करना उस अधिशेष श्रम को अवशोषित करने का एक सकारात्मक तरीका हो सकता है.

ग्रामीण इलाकों में उद्योगों में प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों का सही उपयोग और वहां मौजूद विशाल सामग्री के दोहन के नजरिए से भी देखा जाता है. ग्रामीण औद्योगीकरण की विशेषताओं में पूंजी का कम निवेश, श्रमबल की आसान उपलब्धता और स्थानीय मानव एवं भौतिक संसाधनों को नियोजित करके सरल प्रौद्योगिकी का उपयोग शामिल है. इन क्षेत्रों में व्यवहार्य विकास लाने के लिए स्थानीय संसाधनों के साथ स्थानीय जनशक्ति का विवेकपूर्ण मिश्रण आवश्यक है. हालांकि, ग्रामीण उद्यमिता के विकास की अपनी समस्याएं हैं. ग्रामीण क्षेत्रों में लोग बेरोजगारी, खराब बुनियादी सुविधाएं जैसी समस्याएं विद्यमान हैं.

भारतीय एमएसएमई क्षेत्र कृषि क्षेत्र के अलावा स्व-रोजगार एवं मजदूरी-रोजगार दोनों के लिए व्यापक अवसर प्रदान करता है और अल्प लागत पर गैर-कृषि आजीविका बनाने, संतुलित क्षेत्रीय विकास, जेंडर और सामाजिक संतुलन एवं पर्यावरण की दृष्टि से सतत् विकास आदि को संभव बनाता है. भारतीय एमएसएमई की यह प्रकृति, इस तथ्य के अलावा कि वे आमतौर पर श्रम प्रधान है, ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा बढ़ावा हो सकता है. इसके अतिरिक्त, एमएसएमई का ग्रामीण विकास विकेंद्रीकृत विकास के विचार को बढ़ावा देने में एक लंबा रास्ता तय कर सकता है - ऐसा कुछ जो भारत में समग्र आर्थिक विकास सुनिश्चित करेगा एवं एमएसएमई ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पूंजी निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएगा.

हालांकि, यह बात महत्वपूर्ण है कि एमएसएमई, ग्रामीण और अर्धशहरी दोनों, संस्थागत ऋण तक सीमित पहुंच के साथ नकदी की कमी से जूझ रहे हैं. हमारे देश में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को बड़ी फर्मों की तुलना में वित्तीय पहुंच से अधिक लाभ होता है. ग्रामीण एवं अर्धशहरी दोनों क्षेत्र के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए, सरकार को अधिक ऋण सुविधाएं और बाधा रहित बाजार से संपर्क सुनिश्चित करना चाहिए.

ग्रामीण और अर्ध शहरी क्षेत्रों में एमएसएमई एवं वित्तीय समावेशन एक दूसरे के पूरक हैं. जहां वित्तीय समावेशन के लिए एमएसएमई को सशक्त बनाने की आवश्यकता है वहीं वित्तीय समावेशन द्वारा एमएसएमई को सक्रिय किया जा सकता है. वित्तीय समावेशन का मतलब समाज के पिछड़े एवं कम आय वाले लोगों को वित्तीय सेवाएं प्रदान करना है. इसके साथ ही ये सेवाएं उन लोगों को वहन करने योग्य मूल्य पर मिलनी चाहिए. भारत जैसे विकासशील देश में निवेश का माहौल और विशेष रूप से वित्तीय समावेशन मजबूत विकास के लिए महत्वपूर्ण है जहां बाजार और संस्थागत बुनियादी ढांचे कम विकसित हैं.

जहां पर हम बेरोजगारी और गरीबी जैसे दो प्रमुख विकासात्मक चुनौतियों से जूझ रहे हैं वहां एमएसएमई एक बहुत ही महत्वपूर्ण रोल अदा करता है. वास्तव में यदि हम चाहते हैं कि हमारे देश का विकास अगले दो दशक तक 8 से 10% तक रहे तो हमें एक मजबूत एमएसएमई क्षेत्र की आवश्यकता है जो ग्रामीण एवं अर्द्ध शहरी क्षेत्रों द्वारा पूरा किया जा सकता है. कल के एमएसएमई आज के बड़े कॉर्पोरेट हैं और यह कल की बहुराष्ट्रीय कंपनियां हो सकती हैं. अतः बैंकों एवं दूसरी एजेंसियों को कल की बहुराष्ट्रीय कंपनियां बनाने में गर्व महसूस करना चाहिए.

अंतत: हम यह कह सकते हैं कि एमएसएमई ग्रामीण और अर्धशहरी अर्थव्यवस्था में पूंजी निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं एवं ग्रामीण एवं अर्धशहरी क्षेत्रों के समग्र विकास में एमएसएमई का काफी योगदान हो सकता है.

***

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर (पृष्ठ सं. 48)

1.	ख	8.	घ	15.	क
2.	ग	9.	ख	16.	घ
3.	क	10.	क	17.	ख
4.	क	11.	घ	18.	क
5.	घ	12.	ख	19.	ग
6.	ख	13.	ग	20.	ख
7.	ग	14.	घ		

नराकास सम्मान

ठाणे (पश्चिम) शाखा को नराकास, ठाणे का तृतीय पुरस्कार

दिनांक 29 अगस्त, 2022 को नराकास, ठाणे की 13 वीं छमाही बैठक में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु मुंबई मेट्रो पूर्व क्षेत्र की ठाणे (पश्चिम) शाखा को वर्ष 2021 के लिए तृतीय पुरस्कार प्राप्त करने के उपलक्ष्य में राजभाषा शील्ड व प्रमाणपत्र प्रदान किया गया.

अंचल कार्यालय, भोपाल को नराकास का तृतीय पुरस्कार

वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वय हेतु अंचल कार्यालय,भोपाल को बैंक नराकास, भोपाल से तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. दिनांक 24 अगस्त, 2022 को बैंक नराकास, भोपाल बैठक में भोपाल अंचल के महाप्रबंधक श्री गिरीश सी.डालाकोटी ने यह पुरस्कार प्राप्त किया.

क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै को नराकास का प्रोत्साहन पुरस्कार

मदुरै क्षेत्र को राजभाषा शील्ड पुरस्कार के तहत नराकास, मदुरै द्वारा वर्ष 2021-22 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट और सराहनीय कार्य के लिए बैंकिंग श्रेणी के अंतर्गत प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मनित किया गया. दिनांक 23.09.22 को आयोजित नराकास, मदुरै की बैठक के दौरान श्री धर्म पेरुमाल, उप क्षेत्रीय प्रबंधक, मदुरै क्षेत्र ने यह पुरस्कार समिति के अध्यक्ष से प्राप्त किया.

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर को नराकास (बैंक), सूरत का प्रथम पुरस्कार

नराकास (बैंक) सूरत द्वारा वर्ष 2021-22 के अंतर्गत सूरत शहर क्षेत्र को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. सूरत शहर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुधीर कुमार एवं राजभाषा प्रभारी श्री प्रवीण शर्मा ने यह पुरस्कार समिति के अध्यक्ष से प्राप्त किया.

क्षेत्रीय कार्यालय, औरंगाबाद को नराकास, औरंगाबाद का द्वितीय पुरस्कार

दिनांक 30 सितंबर, 2022 को नराकास, औरंगाबाद की छमाही बैठक एवं पुरस्कार सम्मान समारोह में वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा में बेहतरीन कार्य एवं रिपोर्टिंग के आधार पर नराकास, औरंगाबाद द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, औरंगाबाद को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. यह पुरस्कार मुख्य प्रबंधक श्री मिलिंद शेंडे ने ग्रहण किया.

नराकास बैठकें

नराकास, जालंधर की 21 वीं छ:माही बैठक का आयोजन

दिनांक 26 अगस्त, 2022 को नराकास (बैंक), जालंधर की 21 वीं छ:माही बैठक का आयोजन नराकास अध्यक्ष श्री देवराज बंसवाल की अध्यक्षता में किया गया. इस अवसर पर भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय से उप निदेशक (कार्यान्वयन), श्री कुमार पाल शर्मा, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे. बैठक में ऑनलाइन माध्यम से अंचल प्रमुख श्री विमल कुमार नेगी तथा प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह भी जुड़े.

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन – 2022 के दौरान बैंक द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना, मुख्य महाप्रबंधक श्री दिनेश पंत एवं प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह.

माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह का स्वागत करते हुए बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना.

दिनांक 14-15 सितंबर, 2022 को सूरत में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिंदी दिवस समारोह 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया. इस आयोजन के संयोजन का कार्य हमारे बैंक को दिया गया था. इस आयोजन को सफल बनाने में हमारे बैंक द्वारा पूर्ण सहयोग प्रदान किया गया. इस अवसर पर बैंक के विभिन्न प्रकाशनों को प्रदर्शित करने हेतु प्रदर्शनी एवं एक डिजिटल डिस्प्ले लगाया गया. इस प्रदर्शनी का उद्घाटन कार्यपालक निदेशक श्री अजय के. खुराना द्वारा किया गया. माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने बैंक की प्रदर्शनी का अवलोकन किया. कार्यपालक निदेशक श्री अजय खुराना ने बैंक द्वारा हिंदी प्रयोग को बढ़ावा देने के संबंध में किये जा रहे अभिनव प्रयासों की जानकारी दी.

बैंक की प्रदर्शनी में **अपने हिंदी ज्ञान को आजमाएं और आकर्षक इनाम पाएं** नाम से एक प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया तथा विजेता प्रतिभागियों को पुस्तक से सम्मानित किया गया. इस उपलक्ष्य में बैंक के विभिन्न डिजिटल उत्पादों, ऐप एवं राजभाषा प्रकाशनों को एवं गतिविधियों को दर्शाने वाले पैंपलेट का वितरण भी किया गया.

कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में वार्षिक राजभाषा समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में दिनांक 10 अक्तूबर, 2022 को वार्षिक राजभाषा समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर प्रसिद्ध हास्य कवि पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा को मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित किया गया था. इस कार्यक्रम में बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी समेत कॉर्पोरेट कार्यालय के वरिष्ठ कार्यपालकगण एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे. कार्यक्रम के दौरान हिंदी दिवस 2022 के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए. साथ ही बैंक की मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत मुंबई विश्वविद्यालय तथा एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया और हास्य कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया.

समारोह का शुभारंभ प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा, कार्यपालक निदेशक द्वय श्री अजय के खुराना, श्री जयदीप दत्ता राय एवं मुख्य अतिथि पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा, श्री संजय सिंह, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ. श्री संजय सिंह ने स्वागत संबोधन में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा बैंक को वर्ष 2021-22 के लिए भारत सरकार की राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार प्रदान किए जाने संबंधी सूचना दी. साथ ही उनके द्वारा राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष के दौरान आरंभ की गई - नवोन्मेषी पहलों की भी जानकारी दी गई.

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संबोधन

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में बैंक को वर्ष 2021-22 के लिए **राजभाषा कीर्ति पुरस्कार** मिलने पर हर्ष व्यक्त किया एवं सभी बड़ौदियन को इसके लिए बधाई दी. आपने बताया कि यह उपलब्धि हासिल करने के बाद अब हमारी चुनौती पहले से ज्यादा हो गई है. इस हेतु निरंतर प्रयास किया जाना आवश्यक है ताकि हम सदैव अपना उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करें. उन्होनें बताया कि बैंक में हिंदी और भारतीय भाषाओं को पर्याप्त रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है.

कार्यपालक निदेशकगण का संबोधन

कार्यपालक निदेशक श्री अजय खुराना ने अपने मार्गदर्शी संबोधन में मुख्य अतिथि पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा जी की कविताओं की सुखद अनुभूति की बात की एवं उनके इस योगदान हेतु धन्यवाद दिया. श्री खुराना ने कहा कि राजभाषा में काम करना सिर्फ हमारी सांविधिक आवश्यकता नहीं है, वरन इसे अनुपालन के तौर पर देखा जाना चाहिए. बैंक में हर स्तर पर राजभाषा कार्यान्वयन को पर्याप्त रूप से प्रचारित, प्रसारित और प्रोत्साहित किया जा रहा है जिसके परिणामस्वरुप हमारे बैंक को भारत सरकार की राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. हमें निरंतर यह ध्यान रखना है कि सभी स्तर पर राजभाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी प्रोत्साहित किया जाए. कार्यपालक निदेशक श्री जयदीप दत्ता राय ने अपने मार्गदर्शी वक्तव्य में मुख्य अतिथि पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा जी के प्रति बैंक का निमंत्रण स्वीकार करने के लिए आभार प्रकट किया एवं हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने में उनके योगदान को रेखांकित किया.

मेधावी विद्यार्थी सम्मान

एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय से वर्ष 2019-20 की एम.ए. (हिंदी) की अंतिम वर्ष की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली सुश्री अंकिता अखिलेश पांडे एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली सुश्री प्रिया बद्रिनारायण उपाध्याय को मुख्य अतिथि पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा तथा प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा तथा उपस्थित कार्यपालकों के कर कमलों द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान प्रदान किया गया.

मुंबई विश्वविद्यालय से वर्ष 2020-21 की एम.ए. (हिंदी) की अंतिम वर्ष की परीक्षा में महिला वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली सुश्री काजल संतोष मिश्रा एवं पुरुष वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले श्री मुकेश चंद अडवाणी को मुख्य अतिथि पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा तथा प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान प्रदान किया गया.

हिंदी दिवस 2022 के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा तथा प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा तथा कार्यपालक निदेशकगण द्वारा पुरस्कृत किया गया.

हास्य कवि सम्मेलन के दौरान अपनी प्रस्तुति देते हुए मुख्य अतिथि पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा एवं इस कार्यक्रम के दौरान उपस्थित कॉर्पोरेट कार्यालय के कार्यपालकगण एवं स्टाफ सदस्य.

कार्यक्रम का संचालन एवं समन्वय श्री पुनीत कुमार मिश्र, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) तथा सुश्री सपना घोड़के काले, प्रबंधक (राजभाषा) ने किया. श्री उमानाथ मिश्र, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ वार्षिक राजभाषा समारोह -2022 मधुर स्मृतियों के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ.

सुकून और प्रकृति की गोद : मेरी त्रियुंड यात्रा

रोहित कपूर
प्रबंधक
टैगोर नगर शाखा

हर एक बैंकर की दिनचर्या सुबह पौने दस से लेकर देर रात तक भागा दौड़, तनाव, लक्ष्य, ग्राहक और फिनेकल के एफ4 (F4), एफ10 (F10) में उलझी रहती है. कब सुबह से रात होती है, इसका पता ही नहीं चलता. ऐसे माहौल में, अपने जीवन में नव ऊर्जा, नव स्फूर्ति का संचार करने के लिए जून के दूसरे सप्ताह के अंत में 6 घंटे के सफर के बाद, होशियारपुर, कांगड़ा होते हुए देवभूमि हिमाचल की गोद में बसे धर्मशाला शहर में पहुंच गया. न जानें पहाड़ों की हवा में कौनसी संजीवनी बूटी है जिसमें सांस लेते ही मन, तन एवं आत्मा तरोताज़ा हो जाती है. ऊंचे पहाड़, नीला आसमान, मनभावनी वादियां और हिमाचल की मसाला चाय के साथ-साथ पहाड़ी लोगों द्वारा प्यार से भाईजी कहकर बुलाना - एक सुखद अनुभूति देती है. आज के युवा अच्छा मासिक वेतन होने के बावजूद अपनी भागदौड़ से परिपूर्ण इस जीवन शैली में इन अमूल्य सूखद अनुभूतियों को प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं. धर्मशाला के विश्व विख्यात क्रिकेट स्टेडियम का भ्रमण करते हुए सेल्फी लेकर मैं अगले पड़ाव मक्लोड्गंज की ओर निकल पड़ा. तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा और उनके अनुयाइयों की शरणस्थली मक्लोड्गंज एक अलग ही सभ्यता एवं संस्कृति का गढ़ है. साथ ही साथ ये रमणीय स्थल वर्षो से विदेशी सैलानियों का मनपसंद पर्यटन केंद्र रहा है. पूर्वी एवं पश्चिमी संस्कृति का संगम अगर कहीं देखने को मिलता है तो वो यही स्थान है.

एक तरफ बॉब मारले के संगीत प्रशंसक तो दूसरी और गहरे लाल वस्त्र में ''ओम मनी पदमे हम'' का जाप करते हुए बौद्ध धर्म के अनुयायी. तिब्बत की सभ्यता एवं संस्कृति से जुड़ी दुकानें हर एक पर्यटक को अपनी ओर खींचती हैं. मैं भी खुद को थांगका (रेशमी कपड़े के ऊपर बनी चित्रकारी) को खरीदने से रोक नहीं पाया. मोमोस का लुत्फ उठाने के बाद मैं दलाई लामा की मोनेस्ट्री गया जहां जप, ध्यान और एक आलौकिक ऊर्जा वातावरण का अनुभव मुझे हुआ जिसका वर्णन शब्दों में करना असंभव है. मन में चलते सारे विचार कुछ समय के लिए शून्य हो गए थे और बस भारहीनता का एहसास हो रहा था मानो मन हवा में सैर कर रहा हो. कुछ घंटे वहां बिताने के बाद, मैं चल दिया त्रियुंड की पहाड़ियों की ओर. त्रियुंड पहाड़ियों के शिखर तक पहुंचने के लिए 4 घंटे की पैदल चढ़ाई का सफर तय करना पड़ता है. पथरीला रास्ता बादलों के बीच में से गुजरते हुए ऐसे लगता है मानो यही रास्ता स्वर्ग को ले जाता हो. जहां नज़र दौड़े, वहां बस हरे भरे ऊंचे-ऊंचे पहाड़ जो अपनी हरियाली से मेरा स्वागत कर रहे थे. जैसे ही चढ़ाई का आखरी पहाड़ का मोड़ आया तो बस मेरी आंखे खुली की खुली रह गईं. नील गगन और सामने ऊंची बर्फ से ढकी हुई पहाड़ियां - देखते ही चढ़ाई की सारी थकावट उतर गयी.

हरे भरे मैदान पर ठंडी हवा मानो सुकून की वर्षा कर रही थी. कुछ ही दूरी पर रंग बिरंगे टेंट मनभावन दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे. अपना बैग ज़मीन पर रख मैं पहाड़ की चोटी पर बैठ गया जहां न मोबाइल का सिग्नल था, न ट्रेफिक लाइट का खौफ और ना ही ग्राहक की कोई शिकायत - कुछ था तो बस मैं और प्रकृति. एकांत के वो क्षण मेरे लिए बहुमूल्य थे. खाने के लिए बस चाय, मैगी और राजमा चावल. सूर्यास्त का नज़ारा तो स्वर्ग तुल्य था. रात होते ही ठंड इतनी बढ़ गयी कि जून के महीने में 2 कंबल भी शरीर की कपकपी को शांत करने में नाकामयाब साबित हो रही थी. अपने टेंट के बाहर जब आधी रात को मैं उठकर निकला तो बस जन्नत मेरे

सामने थी – आकाश में चमकते सितारे ऐसे लग रहे थे मानो अभी के अभी नीचे गिर कर हाथ में आ जाएंगे. सामने दूरी पर धर्मशाला शहर एक जगमगाते हुए बल्ब की भांति दिख रहा था. उस क्षण जो आनंद एवं शांति की अनुभूति मुझे हुई उसके लिए शायद मेरे शब्दकोश में शब्द नहीं हैं.

सुबह उठकर देखा तो सूर्योदय के इंतज़ार में सभी पर्यटक पहाड़ी के अलग-अलग चोटियों पर पहले से जमे हुए थे. जैसे ही संतरी किरणें लिए भास्कर देव प्रकट हुए तो स्वर्ण पहाड़ों का विहंगम दृश्य सबके दिलों को छू गया. पहाड़ों से निकलती शीतल जल धारा ने तो जैसे शरीर में नई ऊर्जा का संचार कर दिया. कुछ और देर पहाड़ों की गोद में बैठ, मन न होते हुए भी भारी मन से मैं वापसी के लिए निकल गया. पूरे रास्ते तेज़ वर्षा ने मौसम को और भी सुहावना बना दिया और बाकी पर्यटकों के साथ मैं धीर-धीरे बारिश में संभलते हुए, धर्मशाला पहुंचा. धर्मशाला में प्राचीन कला प्रदर्शनी से कुछ और नायाब कलाकृतियां खरीद आंखो में उन अद्भुत दृश्यों को बसाये मैं एफ4, एफ10 की दुनिया में लौट आया परन्तु मन में एक वादा करते हुए आया कि जल्द ही दोबारा एक नए अंजान रास्ते पर निकल जाऊंगा जहां न मोबाइल हो, न वाहनों का शोर और न ही होंगी भीड़-भाड़ से भरी शहरी बस्तियां.

जीवन हमेशा चलते रहने का नाम है, नए रास्ते खोजना, अंजान पगडंडियों से गुजरना, नए लोगों, संस्कृतियों से परिचित होना – यह सब मानव जीवन में नए अनुभव, नए आयाम, नई ऊर्जा के संवाहक होते हैं. गतिशीलता एवं परिवर्तन प्रकृति का नियम है. इसके विपरीत जड़ता एवं एकरसता, जीवन चक्र एवं मानव जीवन को ठहरे हुए पानी की भांति बना देते हैं.

***

कार्यशाला/ अभिप्रेरणा कार्यक्रम

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली

दिनांक 31 अगस्त, 2022 को अंचल कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा हिंदी कार्यशाला, सामर्थ्य प्रशिक्षण और सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें अंचल के 27 स्टाफ-सदस्यों ने भाग लिया.

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

दिनांक 06 अगस्त, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर में उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अनिश कुमार की अध्यक्षता में क्षेत्र के सभी स्टाफ सदस्यों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्र के 21 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया.

अंचल कार्यालय, हैदराबाद

दिनांक 29 जुलाई, 2022 को अंचल कार्यालय, हैदराबाद द्वारा उप अंचल प्रमुख श्री सीएच राज शेखर की अध्यक्षता में अंचल के उप क्षेत्रीय प्रमुखों एवं राजभाषा प्रभारियों/ नामित अधिकारियों हेतु राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का अयोजन किया गया. कार्यक्रम में हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में लेन-देन संबंधी एसएमएस सुविधा, क्षेत्रीय भाषा प्रशिक्षण, 'बॉब अभिव्यक्ति' ऐप, स्कूल/ कॉलेजों में प्रतियोगिताओं का आयोजन, राजभाषा रेटिंग आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई.

अंचल कार्यालय, भोपाल

दिनांक 06 अगस्त, 2022 को अंचल कार्यालय, भोपाल द्वारा महाप्रबंधक श्री गिरीश सी. डालाकोटी की अध्यक्षता में निवारक सतर्कता पर कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उप महाप्रबंधक श्री नीलब चन्द्र राय तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

हिंदी का वैश्वीकरण – उपादेयता एवं प्रासंगिकता

श्वेता
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय प्रयागराज–II

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय के सूल'.

– भारतेंदु हरिश्चंद्र

अर्थात् – मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना भी मुश्किल है.

विश्व की प्राचीन और सरल भाषाओं की सूची में हिंदी को विशेष स्थान प्राप्त है. यह भाषा हमारी संस्कृति और संस्कारों की पहचान है. हिंदी भाषा हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान और गौरव प्रदान करवाती है. हिंदी का स्थान विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा में आता है. एक स्वतंत्र देश की खुद की एक भाषा होती है, जो उस देश का मान–सम्मान और गौरव होती है. भाषा और संस्कृति ही उस देश की असली पहचान होती है. भाषा ही एक ऐसा जरिया है, जिसकी मदद से हम अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सकते हैं. विश्व में कई सारी भाषाएँ बोली जाती हैं, जिसमें हिंदी भाषा का विशेष महत्व है.

भारत में यह भाषा सबसे ज्यादा बोली जाती है इसलिए हिंदी भाषा को 14 सितम्बर, 1949 के दिन अधिकारिक रूप से राजभाषा का दर्जा दिया गया.

हिंदी भाषा के सम्बंध में महापुरुषों ने अपने विचार निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किए हैं:

''इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित–अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं.'' – राहुल सांकृत्यायन.

''राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है.''– अनंत गोपाल शेवड़े.

''राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है.''– बालकृष्ण शर्मानवीन.

''समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिंदुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी है.'' –सर जार्ज ग्रियर्सन.

''देश को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है.''– सेठ गोविंददास.

हिंदी भाषा का संवैधानिक आधार –

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में संघ की राजभाषा के रूप में ''हिंदी'' को मान्यता मिली है. संविधान में वर्णित है कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा.

भाषा की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है. वैश्वीकरण के बाद हिंदी भी एक नई भूमिका में हमारे सामने आई है. भारत में आज भी हिंदी की भूमिका आम आदमी के सपने और हकीकत के बीच संतुलन बनाती है और अपने विस्तार के लिए कुछ विशेष प्रयास आमंत्रित करती है. दरअसल हिंदी अपनी विशेषता के बल पर ही लगातार अपना अस्तित्व मजबूत कर रही है. राजशक्ति इसलिए कि गणतांत्रिक भारत का संविधान उसे संघ सरकार की राजभाषा के रूप में अधिकार प्रदान करता है. लोकशक्ति हिंदी का स्वभाव है, उसकी बुनियाद है, जिसे वह छोड़ नहीं सकती. परिणामस्वरूप हिंदी विकास के मार्ग पर प्रशस्त है.

हिंदी भाषा का इतिहास

हिंदी भाषा का जन्म लगभग एक हजार वर्ष पहले हुआ था. ऐसा माना जाता है कि हिंदी का जन्म देवभाषा संस्कृत की कोख से हुआ है.

संस्कृत – पालि – प्राकृत – अपभ्रंश – अवहट्ट – हिंदी – यह हिंदी भाषा का विकास क्रम है. हिंदी एक भावात्मक भाषा है, जो लोगों के दिल को आसानी से छू लेती है. हिंदी भाषा देश की एकता का सूत्र है. हिंदी प्राकृत भाषा से होती

हुई अपभ्रंश तक पहुंचती है, फिर अपभ्रंश से गुजरती हुई प्राचीन/प्रारंभिक हिंदी का रूप लेती है. विश्व में कुल लगभग 3 हजार भाषाएं बोली जाती हैं, उनमें से हिंदी एक भाषा है. रूप या आकृति के आधार पर हिंदी वियोगात्मक भाषा है. भारत में भाषा के 4 परिवार मिलते हैं, जो भारोपीय, द्रविड़, ऑस्ट्रिक व चीनी-तिब्बती हैं. भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा परिवार भारोपीय परिवार है.

इंटरनेट पर हिंदी का प्रयोग और विकास

इंटरनेट एक ऐसी जगह है, जहां पर हम हर तरह की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं. पिछले कुछ वर्षों में भारत और विश्व में इन्टरनेट जिस रफ़्तार से विकसित हुआ है, वो सही में काबिले तारीफ है. हिंदी भाषा भी अब इंटरनेट पर तेजी से अपना कब्ज़ा जमा रही है. आज के समय में हिंदी भाषा हर समाचार पत्र से लेकर हिंदी ब्लॉग तक अपनी पहचान हासिल कर रही है.

आज के स्मार्टफोन के रूप में हर हाथ में एक तकनीकी डिवाइस मौजूद है और उसमें हमारी भाषा में सभी ऑपेरेटिंग सिस्टमों में हिंदी में संदेश भेजना, हिंदी की सामग्री को पढ़ना, सुनना या देखना लगभग उतना ही आसान है जितना अंग्रेजी की सामग्री को. हालांकि कंप्यूटरों और इंटरनेट पर भी हिंदी का व्यापक प्रयोग हो रहा है, लेकिन मोबाइल ने हिंदी के प्रयोग को अचानक जो गति दे दी है, उसकी कल्पना अभी पांच साल पहले तक किसी ने नहीं की थी. इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं की सामग्री की वृद्धि दर अपेक्षाकृत बेहतर है. अंग्रेजी के उन्नीस फीसद सालाना के मुकाबले भारतीय भाषाओं की सामग्री नब्बे फीसद की रफ्तार से बढ़ रही है.

हिंदी भाषा की विशेषताएं

इस भाषा को देवभाषा संस्कृत का सरलतम रूप कहा जा सकता है. इसकी लिपि देवनागरी लिपि है. हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है जिसमें हम दूसरी भाषा के शब्द भी आसानी से प्रयोग कर सकते हैं, जिससे हमें आसानी होती है. इस भाषा की वर्णमाला में स्वर और व्यंजन दूसरी भाषाओं की वर्णमालाओं की तुलना में बहुत अधिक व्यवस्थित है. हिंदी भाषा के वर्ण हम जो भी बोलते हैं, उन्हें आसानी से लिख भी सकते हैं जबकि दूसरी भाषाओं में ऐसा संभव नहीं होता है. यह एक ऐसी भाषा है, जिसमें निर्जीव वस्तुओं के लिए भी लिंग का निर्धारण होता है. हिंदी भाषा को पढ़ने के साथ ही इसे आसानी से लिखा भी जा सकता है. हिंदी भाषा के शब्दकोश में मौजूद शब्द हर काम के लिए अलग अलग हैं और ये शब्द बढ़ ही रहे हैं. इस भाषा में साइलेंट लेटर्स नहीं होते हैं, जिसके कारण ही इसका उच्चारण और लेखन में शुद्धता होती है. सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग हमेशा बढ़ता ही जा रहा है इसलिए सभी बड़ी बड़ी सोशल मीडिया वेबसाइट ने हिंदी को महत्व देना शुरू कर दिया है.

वैश्वीकरण में हिंदी भाषा का स्थान और महत्व

पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति का प्रचार करने का श्रेय एक मात्र हिंदी भाषा को जाता है. भाषा की जननी और साहित्य की गरिमा हिंदी भाषा जन-आंदोलनों की भी भाषा रही है. आज भारत में पश्चिमी संस्कृति को अपनाया जा रहा है. यह भाषा भारत के अलावा नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, अमेरिका, यमन, युगांडा, जर्मनी, न्यूजीलैंड, सिंगापुर आदि में भी बोलने वालों की संख्या लाखों में है. इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया, यूके, कनाडा और यूएई में भी हिंदी बोलने वाले और द्विभाषी या त्रिभाषी बोलने वालों की संख्या भी बहुत है.

मॉरीशस, फीज़ी, सूरीनाम, जमैका, टोबैगो और गुयाना आदि देशों में करीब पचास फीसदी लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं. हिंदी के सैकड़ों शब्द मॉरीशस की क्रियोल में हैं. अमेरिका, कनाडा जैसे देशों में आप्रवासियों की बड़ी आबादी कुछ अलग प्रकार की हिंदी बोलते हैं. वहां के हिंदी रेडियो कार्यक्रमों में भारतीय रेडियो कार्यक्रमों की ही तरह गुणवत्ता नजर आती है. हॉलीवुड की फिल्मों में भी हिंदी शब्दों का प्रयोग हो रहा है. ऑस्कर से सम्मानित फिल्म 'अवतार' हिंदी का ही शब्द है. कुछ वर्ष पहले अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धूम मचाने वाली फिल्म 'स्लमडॉग मिलिनेयर' का 'जय हो' गाना इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है. मीडिया की खबरों के मुताबिक, इस गाने का प्रयोग फिलीपींस, स्पेन आदि देशों में जेल कैदियों की दशा सुधारने में किया जा रहा है.

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का प्रसार लिपि के स्तर पर भी दिख रहा है. वैश्वीकरण के बाद हुए भाषायी विस्तार से हिंदी में भारतीय भाषाओं के शब्द ही नहीं आए, बल्कि इसका प्रसार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी आप्रवासियों और विदेशियों की बोली में देखा जा सकता है. हिंदी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों में भी देखा जा सकता है. संचार माध्यमों ने हिंदी के वैश्विक रूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है.

भाषाएं संस्कृति की वाहक होती हैं और संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रमों से भारतीय समाज के बदलते सच को हिंदी के बहाने ही उजागर किया गया है.

जिस तरह कुछ सीमा तक हिंदी से अंग्रेजी की तरफ संक्रमण का प्रभाव बढ़ रहा है, उसी तरह कई अन्य भाषाओं का प्रवाह हिंदी की तरफ बढ़ा है, जिसका नतीजा है कि हिंदी एक प्रमुख संपर्क भाषा बन रही है. पब्लिक लैंग्वेज सर्वे ऑफ़ इंडिया के ताजा सर्वेक्षण के आंकड़े बताते हैं कि वृद्धि की मौजूदा रफ्तार से हिंदी पचास साल में अंग्रेजी को पीछे छोड़ देगी. यह सब हिंदी की भाषायी सामर्थ्य, समृद्धि, विविधता, विस्तार, जीवंतता, वैज्ञानिकता आदि के कारण है और इसमें वैश्वीकरण का जबरदस्त योगदान है. (वैश्वीकरण के दौर में हिंदी को और सशक्त बनाने के लिए दूसरी भाषाओं के साथ इसके संबंधों को अनुवाद के माध्यम से मजबूत करना होगा. अनुवाद की भूमिका भाषा की संपन्नता और समृद्धि में सहायक होती है. इसके लिए हिंदी को जनभाषा के स्वरूप के निकट जाना होगा, क्योंकि लोकतंत्र की सफलता लोक को तंत्र के निकट लाने में निहित है.

स्वाभाविक ही भारतीय बाजार की भूमिका बड़ी हो गई है. वैश्वीकरण के दौर में भारतीय बाजार की ताकत जैसे-जैसे बढ़ेगी, भारतीय भाषाओं और हिंदी की भूमिका व्यापक होगी. वर्तमान कॉर्पोरेट युग में औद्योगिक उत्पाद, उपभोक्ता, बाजार और टेक्नोलॉजी का सर्वथा नया संबंध बन रहा है. इसमें सब कुछ बहुराष्ट्रीय है. परन्तु इसकी जुबान वही है, जो हमारी-आपकी जुबान है. यानी वैश्वीकरण के दौर में हमारे बीच जो चीजें बिक रही हैं वे भले दुनिया के किसी भी हिस्से का उत्पाद हों, किन्तु हमारी भाषा में बिक रही हैं.

भाषा परिचय का सबसे बेहतर और सहज़ माध्यम है. हमारा देश भारत जो विविधताओं से भरा हुआ है जहाँ अनेक धर्म, जाति, पंथ के लोग अनेक भाषाएँ बोलते, पढ़ते और समझते हैं. इन सब के बीच हिंदी एक सर्वमान्य भाषा का माध्यम है. इस भाषा के प्रति हम सभी का यह कर्तव्य है कि हमें इसके विस्तार के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए. हमें इसका भरपूर सम्मान करना चाहिए. यह भाषा सभी धर्मों को जोड़े रखने का काम करती है. सभी को यह समझाना चाहिए कि हिंदी का प्रयोग करना हीनता का प्रतीक नहीं बल्कि यह हमारा गौरव है.

***

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा वरिष्ठ कार्यपालकों हेतू संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 24 अगस्त, 2022 को नई दिल्ली द्वारा अंचल के वरिष्ठ कार्यपालकों के लिए 'तकनीक के साथ - राजभाषा का विकास' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री अंशुली आर्या (भा.प्र.से) सचिव, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग रहीं तथा अध्यक्षता श्री अमित तुली, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, नई दिल्ली अंचल ने की. संगोष्ठी में प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह भी उपस्थित रहे और उन्होंने उद्घाटन सत्र में समग्र बैंक के स्तर पर राजभाषा के क्षेत्र में की गई नवोन्मेषी पहलों और कार्यों की सारगर्भित व प्रभावी प्रस्तुति दी.

हैप्पी हार्मोन - खुशियों की कुंजी

कोमल बिजलानी
अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय
बड़ौदा जिला क्षेत्र

खुशियों की तलाश में, हर किसी को कोई ग़म है
कोई सो जाता है यहां चैन से, किसी को नींद आती कम है
कभी-कभी आती है चेहरे पर हंसी, वरना सब ही गुमसुम है
ढूंढते हैं खुशियों का ठिकाना, पर मिलते कहां खुद से हम हैं.

किसी की खुशी है प्यार में, किसी की बीवी से तकरार में
किसी की बच्चे की किलकारी में, किसी की महंगे कार में

है खुशनसीब वो जिन्हें अपनी खुशी की पहचान है
खुशी है मेल मिलाप से, किसी अपने के इंतजार से
रिश्तों के संसार से, अच्छे व्यवहार-विचार से
हर पल को हसीन बनाएं, ऐसे दोस्त यार से.

राज़-ए-खुशी अब तक सबने न जाना है
असली खुशी क्या है, कितनों ने पहचाना है?

खुशी यानी प्रसन्नता का मन और मस्तिष्क से सीधा संबंध होता है. अगर आप अपना लक्ष्य पूर्ण करते हैं तो आप आत्मविश्वास और खुशी से भरे रहते हैं. जब कभी आप किसी से उनकी खुशी का रहस्य पूछते हैं तो ढ़ेर सारे जवाब आते हैं. कुछ लोगों को घूमना-फिरना पसंद होता है, तो कुछ लोगों को शॉपिंग करना पसंद होता है. कुछ लोगों को खाना पसंद होता है. वहीं कुछ लोगों को अपने साथी के साथ रहना पसंद होता है. इस बारे में उनका कहना है कि इन चीज़ों को करने से उन्हें खुशियां मिलती है. आसान शब्दों में कहें तो जरूरतों के हिसाब से लोग खुश रहते हैं. हालांकि खुशी केवल एक मानसिक स्थिति है और यह हमारे शरीर में ही उपलब्ध हैप्पी हार्मोन से कंट्रोल होती है. इसके लिए हैप्पी हार्मोन को सदैव बूस्ट रखने की जरूरत है. हैप्पी हार्मोन के नियमित और संतुलित उत्सर्जन से आप हमेशा खुश रह सकते हैं.

हार्मोन असल में शरीर में विभिन्न ग्रंथियों द्वारा निर्मित रसायन होते हैं. ये शरीर में खून के साथ ही आते-जाते हैं. यह दिमाग के संदेशवाहक के रूप में काम करते हैं और शरीर की कई प्रक्रियाओं में भाग लेते हैं. इनका मानसिक सेहत पर तत्काल असर पड़ता है. अगर शरीर में इन हार्मोन की कमी होती है तो व्यक्ति मानसिक रूप से व्यथित रहता है. हमारे शरीर में चार प्रकार के हैप्पी हार्मोन होते हैं - डोपामाइन, ऑक्सीटॉक्सीन, सिरोटोनिन और एंडोर्फिन. इनका विवरण इस प्रकार है:

डोपामाइन :

लक्ष्य हासिल करने में मददगार डोपामाइन आपकी उपलब्धि से जुड़ा हार्मोन है. जब कोई आपके काम की तारीफ या सराहना करता है, तो यह हार्मोन सक्रिय होने लगता है. इसलिए डोपामाइन को फ़ील गुड/मोटिवेशन हार्मोन के रूप में भी जाना जाता है. इस हार्मोन को रिवार्ड केमिकल भी कहा जाता है. डोपामाइन एक हार्मोन और न्यूरोट्रांसमीटर है जो आपके मस्तिष्क के रिवार्ड सिस्टम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है. डोपामाइन का संबंध आनंद के अनुभव, सीखने, याददाश्त समेत कई अन्य बातों के साथ है. आपके शरीर में इसकी मात्रा जितनी ज्यादा होगी, आप उतना ही ज्यादा अपने काम पर फोकस बनाए रखेंगे. यह रचनात्मकता और

एकाग्रता बढ़ाने में मदद करेगा. वास्तव में यह आपके लक्ष्य को पूरा करने के लिए एक मोटिवेशन की तरह है. सफल होने के लिए जरूरी है कि आप तय समय में दिए गए अपने लक्ष्य को पूर्ण करें. इस हार्मोन को बूस्ट करने के लिए कोई भी टास्क बनाकर उसे पूरा करें. छोटी-छोटी जीत, मनपसंद संगीत सुनने से, खुद का ख्याल रखने से, पसंदीदा भोजन करने से, खूबसूरती पर अधिक ध्यान देकर भी डोपामाइन को बूस्ट कर सकते हैं.

अगर आप अपने लक्ष्य को पूरा करते रहेंगे तो आपकी अच्छी छवि बनेगी. डोपामाइन हार्मोन सामाजिक एवं पेशेवर जीवन में आपके निश्चय लेने की क्षमता को बढ़ाता है. इससे आपकी स्थिति बेहतर बनती है. आपको यह समझने की जरूरत है कि किस तरह का इनाम आपको बेहतर काम करने के लिए प्रेरित करता है. आप उससे अपने लक्ष्य को जोड़ दीजिए. डोपामाइन की सेंस्टिविटी को बढ़ाने के लिए सूरज की रोशनी में थोड़ा वक्त बिताएं. डीप ब्रीथिंग और मेडिटेशन की प्रैक्टिस करें. अच्छी नींद ले. सूखे मेवे पनीर और बीन्स का सेवन जरूर करें.

ऑक्सीटोसिन :

ऑक्सीटोसिन हॉर्मोन से रिश्तों में भरोसा, समर्पण और लगाव बढ़ता है, इसलिए इस हार्मोन को लव हार्मोन भी कहते हैं. यह हार्मोन रिलेशनशिप और लोगों से भावनात्मक रूप से जुड़ने में मदद करता है. यह हार्मोन तब उत्सर्जित होता है जब किसी से अपने लगाव का इजहार करते हैं अथवा जब स्नेहशील व्यक्ति साथ में रहता है. शरीर में ऑक्सीटोसिन का स्तर बढ़ाने के लिए दूसरों की मदद करें. बॉडी और फेस मसाज करें, इससे ऑक्सीटोसिन हॉर्मोन एक्टिव होता है. रिश्तो में धोखाधड़ी होना आम है, लेकिन इसके बावजूद खुद पर, अपनों पर, विश्वास करना सीखें. अपनों के साथ कुछ वक्त बिताएं. जब भी मन उदास या दुखी हो, तो अपना समय सोशल मीडिया पर बिताने की बजाए अपने पार्टनर, बच्चों, पेरेंट्स व पेटस के साथ समय बिताएं, अपने शुभचिंतकों के साथ भी ऑक्सीटोसिन हॉर्मोन उत्सर्जित होता है.

सेरोटोनिन :

यह हॉर्मोन बिगड़े हुए मूड को सुधारता है, इसलिए सेरोटोनिन को एंटीडिप्रेसेंट भी कहते हैं. जब मस्तिष्क में इस हॉर्मोन का स्तर कम होता है, तो व्यक्ति के डिप्रेशन में जाने की संभावना बढ़ जाती है. डिप्रेशन, बेचैनी से बचने के लिए जरूरी है कि छोटी-छोटी बातों को तूल न दें. तनाव महसूस होने पर खुद को व्यस्त रखें. सेरोटोनिन में वृद्धि करने का सबसे प्रभावी और अच्छा तरीका है कि रोजाना 20-30 मिनट तक एक्सरसाइज करें. व्यायाम करने से आप ना केवल फिट रहते हैं बल्कि अच्छी नींद भी आती है, मस्तिष्क शांत रहता है, वजन कम होता है. एक्सरसाइज करने से बॉडी में सेरोटोनिन का उत्पादन बढ़ता है, जिसके कारण हमारे मूड और एनर्जी लेवल में सुधार होता है. सीखने की क्षमता और याददाश्त को भी नियंत्रित करने में मदद करता है. जब भी आप लो फील करें तो ब्रिस्क वॉक पर जाएं, डांस करें या जिम जाएं आपका मूड तुरंत बदल जाएगा. जब भी हम लो महसूस करते हैं, तो हमें मीठा खाने या कार्बोहाइड्रेट से भरपूर फूड खाने का मन करता है क्योंकि गुड कार्बोहाइड्रेट्स शरीर में हैप्पी हॉर्मोन को बढ़ाने में मदद करते हैं, शरीर में सेरोटोनिन का स्तर बढ़ता है और बिगड़े हुए मूड में सुधार होता है.

एंडोर्फिन :

इस हार्मोन को नेचुरल पेनकिलर भी कहते हैं. एंडोर्फिन हार्मोन वास्तव में आपको दृढ़ निश्चयी और खुश रखने में मदद करता है. इससे आपका मूड बेहतर बनता रहता है और शारीरिक दर्द, मानसिक कष्ट एवं भावनात्मक तनाव घटता है. इससे आपका ज्ञान भी बढ़ता है. इसे बढ़ाने के लिए जरूरी है कि आप फन एक्टिविटी बढ़ाए. जब भी मौका हो ठहाका लगाकर हँसे. एंडोर्फिन आपके शरीर का प्राकृतिक दर्द निवारक है. दर्द शरीर में तनाव या परेशानी होने पर पैदा होता है. एंडोर्फिन का स्तर तब बढ़ जाता है जब आपका शरीर खुद को खुश करने वाले काम करता है. इन कामों में भोजन करना, वर्क आउट/ एक्सरसाइज करना आदि शामिल है. इसके अतिरिक्त कॉमेडी शो देखें, लाफ्टर थेरेपी अपनाएं, डार्क चॉकलेट खाएं.

हैप्पी हार्मोन में कमी न आने दें. जीवन में व्यस्त रहें, स्वस्थ रहें, मस्त रहें और खुश रहें. हंसी और खुशी बांटने से बढ़ती है इसलिए खुलकर हंसे और खुशियां फैलाएं.

***

आयुर्वेद और स्वास्थ्य

सुन्दर सिंह
अधिकारी
शिक्षा ऋण संस्वीकृति प्रकोष्ठ
नई दिल्ली

जब भी हम आयुर्वेद की बात करते हैं मुझे तैत्तिरीय उपनिषद का श्लोक सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः अर्थात् 'सभी सुखी हों और सभी निरोग हों' याद आता है जो आयुर्वेद की मूल भावना और उद्देश्य को व्यक्त करता है.

आयुर्वेद, संस्कृत शब्द की दो धातुओं के संयोग से बना है - आयुः + वेद = 'आयु ' अर्थात् लम्बी उम्र या जीवन और 'वेद' अर्थात् विज्ञान. अतः आयुर्वेद का शाब्दिक अर्थ दीर्घ जीवन का विज्ञान है. आयुर्वेद को पंचम वेद भी माना गया है तथा चारों वेदों में आयुर्वेद के संबंध में प्रमुखता से सैकड़ों सूक्त लिखे गये थे. अथर्ववेद में आयुर्वेद के संबंध में विस्तृत उल्लेख मिलता है.

आयुर्वेद प्राकृतिक एवं समग्र स्वास्थ्य चिकित्सा की प्राचीन प्रणालियों में से एक है जिसका प्रादुर्भाव आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व माना जाता है.

महर्षि चरक ने 'चरक-संहिता' नामक ग्रन्थ में आयुर्वेद की परिभाषा देते हुए भी कहा है कि जिसमें हित-आयु, अहित-आयु, सुख-आयु और दुख-आयु का वर्णन हो, उस आयु के लिए हितकर (पथ्य) व अहितकर (अपथ्य) द्रव्य, गुण, कर्म का भी वर्णन हो एवं आयु का मान (प्रमाण या अवधि) व उसके लक्षणों का वर्णन हो, उसे आयुर्वेद कहते हैं.

आयुर्वेद के अनुसार मानव शरीर चार मूल तत्वों से निर्मित है - दोष, धातु, मल और अग्नि. आयुर्वेद में शरीर की इन बुनियादी बातों का अत्यधिक महत्व है. इन्हें 'मूल सिद्धांत' या आयुर्वेदिक उपचार के 'बुनियादी सिद्धांत' कहा जाता है.

आयुर्वेद के अनुसार व्यक्ति के स्वस्थ होने का मानदंड है कि वह व्यक्ति जिसके शारीरिक एवं मानसिक दोष साम्य होंगे, परिणामतः उनकी शरीरस्थ अग्नि एवं उनसे उत्पन्न धातु निर्माण प्रक्रिया तथा फलस्वरूप परिपाचित मल निष्कासन प्रक्रिया भी साम्य होगी. उस व्यक्ति की आत्मा, इन्द्रियां तथा मन भी प्रसन्न होगा.

आजकल जहां एलोपैथिक दवाएं बीमारी होने के मूल कारण पर ना जाकर इसके लक्षणों को दूर करने पर केंद्रित होती हैं, वहीं आयुर्वेद हमें बीमारी होने की मूलभूत समस्याओं के साथ-साथ इसके समग्र निदान के विषय में भी बताता है.

हमारे दिन प्रतिदिन के आचार व्यवहार में, देखने सुनने में आता है कि किसी रोग विशेष के प्रभाव का शमन करने हेतु घरेलू पदार्थों/ जड़ी-बूटियों का ही प्राथमिक तौर पर उपयोग होता है. किसी को खांसी-जुकाम, गला खराब होने पर ठण्डा पानी वर्जित होता है तथा अदरक, तुलसी की चाय, तुलसी एवं काली मिर्च अथवा शहद के साथ अदरक का रस अथवा दूध व हल्दी का सेवन आदि उपयोग करने से रोग का निदान होता है. कहने का अर्थ है, चीजों का प्रकृति के आधार पर अर्थात् ठण्डी या गर्म होना, पथ्य या अपथ्य होना जैसे सभी निर्देश आयुर्वेद के ही अंग हैं.

वर्तमान समय में आयुर्वेद की प्रासंगिकता:-

आज के भागदौड़ भरे जीवन में हम रोग के कारणों को जानने के बजाए, दवाएं खाकर लक्षणों का उपचार करते रहना ही ठीक समझते हैं जिसका परिणाम असाध्य रोगों के रूप में

प्रकट होता है. आज अस्वस्थता के मूल कारणों के उपचार के बजाय केवल लक्षणों को दवाओं से शांत कर देना खतरनाक हो सकता है, क्योंकि लक्षणों के द्वारा ही हमें शरीर से किसी रोग विशेष के बारे में संकेत मिलता है और इन्ही संकेतों के माध्यम से आयुर्वेद, रोग व्याधियों आदि समस्याओं के समग्र निदान की राह अग्रसर करता है.

आयुर्वेद दो प्रकार से आरोग्यता का लक्ष्य प्राप्त करता है.

1– प्रतिरोध अथवा बचाव

2– रोग शमन एवं प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करना

1– प्रतिरोध अथवा बचाव:– जैसे आदर्श पोषण और जीवनशैली के सुधारात्मक उत्प्रेरक से शरीर स्वयं रोगप्रतिरोधक क्षमता का विकास करने में सक्षम है.

यदि शरीर बहुत तनाव में है, तो जड़ी–बूटियों से बनी समग्र दवाओं को लेने से शरीर को पुन: संतुलन प्राप्त करने में सहायता मिलती है, ताकि शरीर वह सब कर सके जिसके लिए वह बना है. स्वयं का उपचार समग्र आरोग्य के इस नजरिए में जीवन के सभी पहलू आ जाते हैं. इसमें पोषण, जीवनशैली, वर्तमान स्वास्थ्य की स्थिति, वंशानुगत कमजोरी और संवेगात्मक स्वास्थ्य शामिल है. कई जड़ी–बूटी विशेषज्ञों का मानना है कि मन, शरीर और आत्मा आपस में जुड़े हुए हैं और इन सभी को ध्यान में रखते हुए केवल एक भाग का उपचार करना संभव नहीं है.

महर्षि बागभट्ट ने आहार द्वारा प्रतिरक्षा के सिद्धांतों पर विस्तृत शोध के उपरान्त किसी भी खाद्य पदार्थ के उपभोग के समय जैसे दिवस, काल, ऋतु काल, शारीरिक अवस्था, उम्र श्रेणी आदि के अनुसार उसके प्रभाव को बताया है. जैसे बाजरा शीत ऋतु में पथ्य और ग्रीष्म काल में अपथ्य आहार है. आहार से ही शरीर का परिचालन निर्धारित होता है. अपथ्य कब्ज को जन्म देता है तथा कब्ज अधिकतर रोगों की जननी मानी गई है. सुबह फल आदि का ताजा रस एवं फल का सेवन, मध्याह्न काल में अन्न और उससे बने आहार के उपरांत छाछ (मट्ठा) का सेवन एवं संध्याकाल में (सूर्यास्त से पूर्व) हल्का एवं तेलरहित आहार के उपरांत शयन से दो घण्टे पूर्व एक गिलास दुग्ध पान कब्ज जैसी व्याधियों से मुक्त रखने एवं प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत बनाता है.

2– रोग शमन एवं प्रतिरक्षा विकास:–

आधारभूत चिकित्सकीय मत मतांतर में संगत चिकित्सा से आशय शरीर को स्वस्थ बनाने की प्रक्रिया से है. हालांकि, आयुर्वेद के प्रमुख उद्देश्यों का सारांश दर्शाता है कि स्वास्थ्य का रखरखाव और उसे बढ़ावा देना, रोग का बचाव ही प्राथमिकता है और रोगों का निदान द्वितीयक उद्देश्य.

रोग के उपचार में पंचकर्म प्रक्रियाओं द्वारा शारीरिक सांचे या उसके घटकों में से किसी के भी असंतुलन के कारकों से बचना और शारीरिक संतुलन बहाल करने तथा भविष्य में रोग की पुनरावृत्ति को कम करने के लिए शरीर तंत्र को मजबूत बनाने हेतु दवाओं, उपयुक्त आहार, गतिविधि का उपयोग करना ही रोग निदान की श्रेणी में आता है.

आम तौर पर इलाज के उपायों में शामिल होती हैं दवाएं, विशिष्ट आहार और गतिविधियों की निर्धारित दिनचर्या. इन तीन उपायों का प्रयोग दो तरीकों से किया जाता है. उपचार के एक दृष्टिकोण में तीन उपाय रोग के मूल कारकों और रोग की विभिन्न अभिव्यक्तियों का प्रतिकार करते हैं. दूसरे दृष्टिकोण में दवा, आहार, और गतिविधि के यही तीन उपाय रोग के मूल कारकों तथा रोग प्रक्रिया के समान प्रभाव डालने पर लक्षित होते हैं. चिकित्सकीय दृष्टिकोण से इन दो प्रकारों को क्रमशः विपरीत व विपरीतार्थकारी उपचार के रूप में जाना जाता है.

निष्कर्ष–

आज के व्यस्ततम जीवन के बीच यदि आयुर्वेद में उल्लिखित सावधानियों का पालन करते हुए रोगों से बचाव की प्रवृत्ति का विकास कर पाने में सक्षम हो पाएं तो, निःसंदेह दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कल्पना को पूर्ण सुख की अनुभूति के साथ जिया जा सकता है.

जनश्रुति 'पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया' हमें स्वास्थ्य के महत्व को समझाती है.

स्वास्थ्य की बलि देकर धनार्जन अंत में स्वास्थ्य के साथ साथ धन का भी नाश कर देगी.

पथ्य आहार, जीवन शैली नियमन, ऋतु संगत व्यवहार जैसे छोटे–छोटे प्रयासों द्वारा निरोग जीवन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है. कोरोना जैसी वैश्विक महामारी ने आयुर्वेद की महत्ता को पुनः प्रतिस्थापित किया है. प्रतिरक्षा विकास के उपलब्ध संसाधनों आयुर्वेदिक पदार्थों जैसे जडी–बूटियों, औषधियों आदि के उपयोग ने महामारी से बचाव में सम्यक योगदान दिया है जो आयुर्वेद की प्रासंगिकता को इंगित करता है.

***

अन्य गतिविधियां

बड़ौदा अंचल की पत्रिका का विमोचन

बड़ौदा अंचल की पत्रिका 'बड़ौदा दर्पण' के जून 2022 अंक का विमोचन दिनांक 22 अगस्त, 2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा की छमाही बैठक में समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री दिनेश पंत, समिति के उपाध्यक्ष एवं अंचल प्रमुख, बड़ौदा अंचल, श्री राजेश कुमार सिंह तथा प्रमुख राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह द्वारा अन्य कार्यपालकों की उपस्थिति में किया गया.

चण्डीगढ़ अंचल द्वारा वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम

दिनांक 23 सितंबर, 2022 को चण्डीगढ़ अंचल द्वारा आनंद शिक्षा संस्थान तथा आशियाना बाल सदन में वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में बड़ौदा अकादमी, चण्डीगढ़ के शिक्षण प्रमुख श्री अनिल कुमार तथा संकाय सदस्य श्री नीरज ब्यास का सहयोग प्राप्त हुआ. शिक्षण प्रमुख श्री अनिल कुमार ने छात्र – छात्राओं को बैंक के विभिन्न उत्पादों तथा साइबर सुरक्षा के संबंध में विस्तृत जानकारी दी.

क्षेत्रीय कार्यालय, भरतपुर द्वारा ई–पत्रिका का विमोचन

दिनांक 09 सितंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, भरतपुर की हिंदी ई–पत्रिका घना भरतपुर के जनवरी–जून 2022 के सयुंक्तांक का विमोचन नेटवर्क उप महाप्रबंधक, जयपुर अंचल श्री बी. एल. मीणा द्वारा किया गया.

मण्डीदीप शाखा, सागर क्षेत्र का राजभाषा विषयक निरीक्षण

दिनांक 07 सितंबर, 2022 को श्री हरीश सिंह चौहान, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य) भोपाल द्वारा मण्डीदीप शाखा, सागर क्षेत्र का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया. उक्त अवसर पर संबंधित शाखा के शाखा प्रमुख श्री नरेन्द्र प्रसाद यादव के साथ–साथ अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

प्रतियोगिताएं

'हिंदी व्याख्यान प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 22 सितंबर, 2022 को अंचल कार्यालय, भोपाल द्वारा अंचल की आदर्श हिंदी शाखाओं हेतु 'उत्कृष्ट ग्राहक सेवा एवं व्यवसाय का संबंध' विषय पर हिंदी व्याख्यान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. उक्त अवसर पर अंचल की 18 आदर्श हिंदी शाखाओं के स्टाफ सदस्यों ने हिस्सा लिया था.

'हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 14 सितंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल की बरखेड़ी शाखा द्वारा स्थानीय स्कूल में हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. जिसमें विद्यार्थियों को शाखा प्रमुख श्री सुनील वर्मा ने संबोधित किया.

अन्य गतिविधियां

क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच

दिनांक 20 जुलाई, 2022 को वार्षिक राजभाषा कार्य योजना के अनुसार प्रत्येक तिमाही के अंतर्गत शाखा के व्यवसाय वृद्धि में सहयोग हेतु आदर्श हिंदी शाखा सेंटर पॉइंट के शाखा प्रमुख श्री रोहित वैश्य द्वारा महत्वपूर्ण ग्राहक श्री मनीष आहूजा (ट्रस्टी, विजन इंटरनेशनल स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, अंकलेश्वर) को सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, अलवर द्वारा संगोष्ठी का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, अलवर द्वारा आयोजित संगोष्ठी में उप क्षेत्रीय प्रमुख एवं क्षेत्रीय प्रमुख महोदय द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने एवं दैनिक बैंकिंग कार्य को 100% हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित किया गया. इस अवसर पर आयोजना विभाग व परिचालन एवं सेवाएं विभाग को हिंदी में कार्य करने के लिए पुस्तक से सम्मानित किया गया.

बॉब महाकौशल राजभाषा गौरव सम्मान समारोह का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर द्वारा क्षेत्र के प्रतिष्ठित साहित्यकार, महाकाव्य दधीचि के प्रणेता श्री आचार्य भगवत दुबे को साहित्य के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान हेतु क्षेत्रीय प्रमुख, जबलपुर श्री कुमार नरेंद्र द्वारा दिनांक 22 सितंबर, 2022 को 'बॉब महाकौशल राजभाषा गौरव' सम्मान से सम्मानित किया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख, श्री हरिओम उपाध्याय तथा कार्यालय के समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

क्षेत्रीय कार्यालय, बांसवाड़ा में हिंदी पुस्तकालय का अनावरण

दिनांक 08 सितंबर, 2022 को हिंदी दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, बांसवाड़ा में हिंदी पुस्तकालय का अनावरण नेटवर्क उप महाप्रबंधक श्री एस. के. बंसल के कर कमलों द्वारा किया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख श्री महेंद्र कुमार जैन, उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री जवानमल रमेशा एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

महामुकाबला अभियान में विशेष योगदान हेतु सम्मान

गोरखपुर क्षेत्र – महामुकाबला अभियान

हिंदी दिवस – 2022 के अवसर पर दिनांक 17 सितंबर, 2022 को महामुकाबला अभियान में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन करने वाले बीसी एवं बीसी सुपरवाइजर को क्षेत्रीय प्रमुख, श्री जगज्जीबन महापात्र एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संजय कुमार सिंह ने सम्मानित किया .

जयपुर क्षेत्र – महामुकाबला अभियान

दिनांक 21 जुलाई, 2022 को उप क्षेत्रीय प्रमुख, जयपुर क्षेत्र, श्री दलराज सिंह धनखड़ द्वारा महामुकाबला अभियान के प्रथम चरण के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले बीसी सुपरवाइजरों एवं दुर्गापुरा शाखा के शाखा प्रमुख को क्षेत्रीय कार्यालय स्तर पर पुरस्कृत किया गया.

नराकास गतिविधियां

अंचल कार्यालय, बड़ौदा द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

अंचल कार्यालय, बड़ौदा द्वारा दिनांक 20 अगस्त, 2022 को नराकास (बैंक), वडोदरा के तत्त्वावधान में प्रगति विद्यालय, भायली के विद्यार्थियों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में 30 से अधिक विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया. विजेता प्रतिभागियों को मुख्य प्रबंधक, भायली शाखा, श्री सावन कुमार द्वारा पुरस्कृत किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर द्वारा 'चित्र देखो कहानी लिखो' प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 02 सितंबर, 2022 को नराकास उदयपुर के तत्त्वावधान में क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर द्वारा 'चित्र देखो कहानी लिखो' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. उक्त प्रतियोगिता का शुभारंभ श्री अनादि भट्ट, उप क्षेत्रीय प्रमुख एवं नराकास सदस्य सचिव श्री गिरिराज पालीवाल, बी.एस.एन.एल द्वारा किया गया. उक्त प्रतियोगिता में 27 प्रतिभागियों ने भाग लिया.

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर द्वारा अंतर बैंक चित्र आकलन प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 07 जुलाई, 2022 को नराकास (बैंक), जबलपुर के तत्वावधान में क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर द्वारा अंतर बैंक चित्र आकलन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में सभी 12 बैंक तथा 06 बीमा कार्यालयों के कुल 36 स्टाफ सदस्यों ने सहभागिता की.

नराकास (बैंक), जालंधर द्वारा कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 27 जुलाई, 2022 को नराकास (बैंक), जालंधर द्वारा सदस्य बैंकों हेतु सामान्य हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

नराकास बैठकें

नराकास, जयपुर की 74 वीं अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन

दिनांक 31 अगस्त, 2022 को नराकास (बैंक) जयपुर की 74 वीं अर्द्ध वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष व महाप्रबंधक श्री के के चौधरी, उपाध्यक्ष व उप अंचल प्रमुख श्री सुधांशु शेखर खमारी सहित बैंक नराकास जयपुर के सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख शामिल रहे. बैठक में सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय, भारत सरकार श्री नरेन्द्र मेहरा व सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए.

नराकास, टोंक की छठी अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन

दिनांक 27 जुलाई, 2022 को टोंक नराकास की छठी अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से किया गया. इस बैठक की अध्यक्षता अग्रणी जिला प्रबंधक, टोंक श्री के ठकुरिया द्वारा की गई. बैठक में मार्गदर्शी वक्तव्य प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय कुमार सिंह ने दिया. सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सदस्य कार्यालयों की छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई एवं बेहतर कार्यान्वयन हेतु मार्गदर्शन दिया गया.

प्रतियोगिताएं

'चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 17 सितंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना की मलोट शाखा द्वारा सरकारी प्राथमिक विद्यालय, पश्चिम-2, मलोट में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

'भाषण प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 22 सितंबर, 2022 को अंचल कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा स्टाफ-सदस्यों के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

'चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, गोधरा द्वारा दिनांक 20 जुलाई, 2022 को गुसर प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों हेतु चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

'हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 09 सितंबर, 2022 को चण्डीगढ़ अंचल के कार्यपालकों के लिए ऑनलाइन माध्यम से हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

'वाक्य बनाओ ज्ञान बढ़ाओ' प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 17 सितंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर द्वारा हिंदी की आदर्श शाखा विश्वविद्यालय शाखा के स्टाफ हेतु 'वाक्य बनाओ ज्ञान बढ़ाओ' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

'वाद-विवाद प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 25 अगस्त, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, हिसार की टोहाना शाखा द्वारा गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, टोहाना में वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं सामान्य हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 21 जुलाई, 2022 को सेवाश्रम स्कूल भरूच में पांचवी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा विजेता विद्यार्थियों को उपहार से सम्मानित किया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख भी उपस्थित रहे.

'सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता' का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, अमृतसर की तरनतारन शाखा द्वारा दिनांक 20 जुलाई, 2022 को सरस्वती एस डी पब्लिक स्कूल में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और विद्यार्थियों को स्कूल बैग वितरित किए गए.

प्रतियोगिताएं

'बॉब सुलेखन प्रतियोगिता' का आयोजन

मोरा शाखा, सूरत II शहर क्षेत्र द्वारा दिनांक 05 सितंबर, 2022 को प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 3 एवं 4 के छात्रों हेतु बॉब सुलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 70 छात्रों ने प्रतिभागिता की. इस कार्यक्रम में मोरा शाखा के शाखा प्रमुख श्री कमलेश महतो विशेष रूप से उपस्थित रहे.

'हिंदी प्रश्नोतरी प्रतियोगिता' का आयोजन

खोजपारडी शाखा, सूरत जिला क्षेत्र द्वारा दिनांक 19 जुलाई, 2022 को सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 4 एवं 5 के छात्रों हेतु हिंदी प्रश्नोतरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 25 छात्रों ने प्रतिभागिता की. इस कार्यक्रम में एसएसआई शाखा के शाखा प्रमुख श्री मितुल गमित विशेष रूप से उपस्थित रहे.

'सुलेखन प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 20 जुलाई, 2022 को बड़ौदा शहर क्षेत्र के अंतर्गत दिवालीपुरा शाखा द्वारा उत्कर्ष विद्यालय में सुलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर शाखा प्रमुख श्री ईशान जैन ने विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया तथा विद्यालय के विद्यार्थियों को स्टेशनरी आदि का वितरण किया.

'सामान्य सचेतता प्रतियोगिताओं' का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर द्वारा शासकीय दृष्टिबाधितार्थ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, जबलपुर के विद्यार्थियों हेतु भाषण, वाद-विवाद तथा सामान्य सचेतता प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें कुल 48 विद्यार्थियों ने सहभागिता की.

'काव्यपाठ प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 25 अगस्त, 2022 को सेक्टर 7 गुड़गांव शाखा द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालय न्यू कॉलोनी गुरुग्राम स्कूल में छात्रों के लिए काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में कक्षा 4 से 8 तक के कुल 120 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभागी की.

'ब्रेल पाठन, प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 28 सितंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल की मॉडल टाउन शाखा, पानीपत के सहयोग से हरियाणा के एकमात्र दृष्टिबाधित विद्यालय राजकीय विद्यालय, पानीपत में ब्रेल पाठन, हिंदी ग्रुप गायन तथा हिंदी गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया.

प्रतियोगिताएं

'भाषण प्रतियोगिता' का आयोजन

02 अगस्त, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली में स्थित नवादा विलेज शाखा के सहयोग से वेस्ट पॉइंट मॉडल स्कूल के कक्षा 9-12 के विद्यार्थियों के लिए 'भाषण प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया.

'सुलेख लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 22 सितंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर द्वारा क्षेत्र के सहायक संवर्ग के स्टाफ सदस्यों हेतु सुलेख लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. उक्त कार्यक्रम के दौरान रायपुर क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री अभिषेक भारती उपस्थित थे.

'वाद विवाद प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 14 सितंबर, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर द्वारा श्री औंकार सिंह महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता एवं आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रधानाचार्य, उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजेश माथुर क्षेत्र के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे.

'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 05 सितंबर, 2022 को नोएडा क्षेत्राधीन वैशाली शाखा द्वारा स्थानीय उच्च माध्यमिक विद्यालय महाराजपुर में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. प्रतियोगिता में कुल 34 छात्र- छात्राओं ने भाग लिया. विजेता छात्र-छात्राओं को वैशाली शाखा प्रमुख श्रीमती कोमल आर्य द्वारा पुरस्कृत किया गया.

'निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 19 जुलाई, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, अलवर द्वारा ओसवाल स्कूल, अलवर में क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजेश कुमार शर्मा की अध्यक्षता में निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर अलवर मुख्य शाखा प्रबंधक श्री सी.के.शर्मा एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

'हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 29 जुलाई, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर द्वारा कस्तूरबा शिक्षा आश्रम विद्यामंदिर, भुवनेश्वर के विद्यार्थियों के लिए हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में कक्षा 9 के विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की. इस प्रतियोगिता में विजेता विद्यार्थियों एवं सहभागिता करने वाले विद्यार्थियों को दिनांक 26 अगस्त, 2022 को बैंक ऑफ़ बड़ौदा, भुवनेश्वर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजीव कृष्णा द्वारा ट्रॉफी, प्रमाणपत्र आदि पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए गए.

प्रतियोगिताएं

'आशुभाषण प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 28 जुलाई, 2022 को अंचल कार्यालय, कोलकाता द्वारा साहागंज हाई स्कूल में आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया साथ ही इस दौरान बैंकिंग साइबर सुरक्षा पर भी प्रस्तुति दी गई. कार्यक्रम में 170 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की.

'बॉब चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 20 जुलाई, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर द्वारा बेतियाहाता प्राथमिक स्कूल में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर 50 से अधिक विद्यार्थियों ने सहभागिता की.

'चित्रकला प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 10 अगस्त, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, विजयवाड़ा द्वारा केंद्रीय विद्यालय नंबर 2 गुंटुपल्ली में विद्यार्थियों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में 400 विद्यार्थियों ने भाग लिया. वन टाउन विजयवाड़ा शाखा प्रमुख श्री बी. मनोहर एवं विद्यालय के प्राचार्य के कर कमलों द्वारा सभी विद्यार्थियों को सम्मानित और पुरस्कृत किया गया.

'हिंदी समाचार वाचन प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 03 अगस्त, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, अमरावती की आदर्श शाखा एमआईडीसी अमरावती शाखा द्वारा 'संत गाडगे बाबा माध्यमिक विद्यालय' में हिंदी समाचार वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. प्रतियोगिता में विजेताओं को शाखा के अधिकारी श्री याज्ञीक सेडमाके द्वारा शील्ड देकर पुरस्कृत किया गया.

'वाद-विवाद प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 08 जुलाई, 2022 को बैंक की गरियाहाट शाखा तथा कोलकाता मेट्रो 2 क्षेत्र द्वारा स्थानीय दक्षिण कलकत्ता आर्य विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में शाखा प्रमुख, गरियाहाट शाखा, श्री अमन कुमार, अन्य शिक्षकगण एवं शाखा के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

'हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन

दिनांक 20 जुलाई, 2022 को क्षेत्रीय कार्यालय, सवाई माधोपुर द्वारा मानटाउन शाखा के संयोजन मे साहू नगर उच्च माध्यमिक विद्यालय में हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रमुख एवं सहायक महाप्रबंधक श्री रामावतार पालीवाल ने की. मुख्य प्रबंधक मान टाउन शाखा श्री सौरभ व्यास ने उपस्थित छात्रों एवं शिक्षकों को बैंक के विभिन्न उत्पादों एवं सेवाओं की जानकारी दी.

'सामर्थ्य' आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम

बैंक की राजभाषा टीम द्वारा एक नवोन्मेषी पहल के रूप में नवीनतम भाषा संबंधी तकनीकी सुविधाओं को शामिल करते हुए 'सामर्थ्य–भाषायी तकनीक संबंधी टूलकिट' को तैयार किया गया है. इस टूलकिट में डिजिटल रूप से हिंदी के उपयोग में सहायक नवीनतम तकनीकी माध्यमों की विस्तृत जानकारियों को शामिल किया गया है. इस टूलकिट को तैयार करने का उद्देश्य बैंक के स्टाफ सदस्यों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी के उपयोग को सरल बनाना है. तदनुसार, इस टूलकिट के माध्यम से पिछली तिमाही में प्रत्येक अंचल के स्टाफ सदस्यों के लिए ऑनलाइन कार्यशाला के जरिए अंचलवार आवश्यक जानकारी दी गई. प्रस्तुत है विभिन्न अंचलों में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां: – संपादक

क्षेत्रीय कार्यालय, पश्चिमी दिल्ली

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग

क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

अंचल कार्यालय, कोलकाता

क्षेत्रीय कार्यालय, सवाई माधोपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा

हिंदी दिवस

राजभाषा हिंदी के प्रयोग में निरंतर बढ़ोत्तरी सुनिश्चित करते हुए इस दिशा में स्टाफ सदस्यों को प्रोत्साहित करने के लिए बैंक द्वारा कई पहलें की जाती रही हैं. इसी क्रम में वर्ष 2022 में बैंक के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया. हम अपने सुधी पाठकों के लिए देश भर के कार्यालयों में आयोजित हिंदी दिवस समारोहों की प्रमुख झलकियां यहां प्रस्तुत कर रहे हैं. – संपादक

अंचल कार्यालय, चण्डीगढ़

अंचल कार्यालय, जयपुर

अंचल कार्यालरु, नई दिल्ली

अंचल कार्यालय, मुंबई

क्षेत्रीय कार्यालय, अमृतसर

क्षेत्रीय कार्यालय, अलवर

क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर

क्षेत्रीय कार्यालय, गोधरा एवं गोधरा 2

हिंदी दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, गुड़गांव

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर

क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, बांसवाड़ा

क्षेत्रीय कार्यालय, बिलासपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, भरतपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

हिंदी दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

क्षेत्रीय कार्यालय, वलसाड

क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ एवं शिमला

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो मध्य

क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुंबई

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो दक्षिण

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो पश्चिम

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद मेट्रो

क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा

अपने ज्ञान को परखिए

1. हाल ही में, कौन भारत का पहला सौर ऊर्जा संचालित गांव बना है?
   (क) खुडी (राजस्थान) (ख) मोढेरा (गुजरात)
   (ग) नौखा (महाराष्ट्र) (घ) मिन्गरी (कर्नाटक)
2. निम्नलिखित में से किसे वर्ष 2022 का साहित्य का नोबल पुरस्कार मिला है?
   (क) मेक्स फोर्ड (ख) मिनी चार्ल्स
   (ग) एनी एर्नक्सि (घ) डेमी जुल
3. कौन व्यक्ति हाल ही में, भारत के दूसरे चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS) बने हैं?
   (क) ले.ज. अनिल चौहान (ख) ले.ज. मनीष चौधरी
   (ग) ले.ज. मोहन चावला (घ) ले.ज. गोपाल प्रताप
4. प्रतिवर्ष ''विश्व हृदय दिवस (World Heart Day)" कब मनाया जाता है?
   (क) 29 सितम्बर को (ख) 30 सितम्बर को
   (ग) 23 सितम्बर को (घ) 27 सितम्बर को
5. निम्नलिखित में से कौन शतरंज में भारत के 76वें ग्रैंडमास्टर बने हैं?
   (क) नवीन सिंघल (ख) आर ओझा
   (ग) टी पुष्पेन्द्र (घ) प्रणव आनंद
6. हाल ही में, कौन इलेक्ट्रॉनिक बैंक गारंटी (Electronic Bank Guarantee) प्रणाली वाला भारत का पहला बैंक बना है?
   (क) एसबीआई (SBI) (ख) एचडीएफसी (HDFC)
   (ग) पीएनबी (PNB) (घ) आईसीआईसीआई (ICICI)
7. केंद्र सरकार ने राजपथ का नाम बदलकर क्या रखा है?
   (क) आजाद पथ (ख) भारत पथ
   (ग) कर्तव्य पथ (घ) अटल पथ
8. 'शिवसागर एयरपोर्ट' किस देश में स्थित है?
   (क) भूटान (ख) बांग्लादेश
   (ग) म्यांमार (घ) मॉरीशस
9. भारत का कौन सा राज्य चंदन की लकड़ी के लिए सबसे अधिक प्रसिद्ध है ?
   (क) तमिलनाडू (ख) कर्नाटक
   (ग) तेलंगाना (घ) आंध्र प्रदेश
10. कौनसा एयरपोर्ट भारत का चार रनवे वाला पहला एयरपोर्ट बना है?
    (क) इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट
    (ख) केम्पेगोव्डा अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट
    (ग) वीर सांवरकर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट
    (घ) राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट
11. निम्नलिखित में से किसे टेलिकॉम कम्पनी वोडाफोन-आइडिया का नया CEO नियुक्त किया गया है?
    (क) रविन्द्र झा (ख) आशीष दिनकर
    (ग) शैलेश त्रिपाठी (घ) अक्षय मुंद्रा
12. भारत के किस नृत्य को UNESCO की सूची शामिल करने के लिए नामित किया है ?
    (क) घूमर (ख) गरबा
    (ग) लावणी (घ) बिहू
13. बौद्ध परंपरा के अनुसार, किस वृक्ष के तहत रानी मायादेवी ने गौतम बुद्ध को जन्म दिया था ?
    (क) पिपल (ख) बरगद
    (ग) साल (घ) चंदन
14. हाल ही में, किसे हॉकी इंडिया के नए अध्यक्ष के रूप में चुना गया है?
    (क) सुरेश माथुर (ख) अनिश खान
    (ग) प्रजेश ठाकुर (घ) दिलीप टिर्की
15. प्रतिवर्ष 22 सितम्बर को किस रोग से पीड़ित लोगों के लिए ''विश्व गुलाब दिवस'' मनाया जाता है?
    (क) कैंसर (ख) डायबीटीज
    (ग) पीलिया (घ) डायरिया
16. भारत की किस भाषा को 'इटालियन ऑफ द ईस्ट' कहा जाता है ?
    (क) तमिल (ख) मलयालम
    (ग) बांग्ला (घ) तेलुगू
17. किस शहर में भारत का पहला लिथियम सेल निर्माण संयंत्र शुरू किया गया है?
    (क) भोपाल (ख) तिरुपति
    (ग) कोची (घ) अहमदाबाद
18. विन्ध्याचल और सतपुड़ा पहाड़ियों के बीच से होकर बहने वाली नदी है ?
    (क) नर्मदा (ख) सिंधु
    (ग) कोसी (घ) गोदावरी
19. कौन व्यक्ति हाल ही में, भारत के अगले (16वें) अटॉर्नी जनरल नियुक्त किए गए है?
    (क) सुशील वर्मा (ख) राजपाल सिंह
    (ग) मुकुल रोहतगी (घ) आनंद मिश्रा
20. महरौली (दिल्ली) के लौह स्तम्भ में किस शासक के विषय में जानकारी मिलती है?
    (क) कुमारगुप्त (ख) विक्रमादित्य
    (ग) चन्द्रगुप्त प्रथम (घ) स्कन्दगुप्त

(उत्तर के लिए पेज नं. 23 देखें)

बैंकिंग शब्द मंजूषा

Actionable claim वादयोग्य दावा

वादयोग्य दावे से ऐसा ऋण अभिप्रेत है, जो अचल संपत्ति को बंधक या चल संपत्ति को दृष्टिबंधक अथवा गिरवी रखते हुए प्राप्त किया गया हो, किंतु ऐसी संपत्ति दावाकर्ता के या तो वास्तविक या आभासी कब्जे में न हो, जिसे सिविल न्यायालय ने राहत देने के लिए आधार प्रदान करने वाला माना हो, भले ही ऐसा ऋण या लाभदायी हित अस्तित्व में हो, प्रोद्भूत हो रहा हो, सशर्त हो या प्रासंगिक हो.

Bulge अस्थायी वृद्धि

ऋण-वचनपत्र में किसी उपबंध का वर्णन करने के लिए कुछ ऋणदाताओं द्वारा प्रयुक्त अनौपचारिक शब्द, जिसके द्वारा ऋण-व्यवस्था के अंतर्गत उधार ली जा सकनेवाली अधिकतम राशि में अस्थायी वृद्धि हेतु अनुमति दी जाती है. यह विशेषकर उन फर्मों को दिए जानेवाले उधार के लिए उपयुक्त है, जिनकी बिक्री में किसी अवधि-विशेष में वृद्धि होती है.

Cross subsidization प्रति-सहायता

विक्रय की ऐसी नीति, जिसमें उपभोक्ताओं के भिन्न-भिन्न समूहों से भिन्न-भिन्न कीमतें ली जाती हैं और एक समूह से प्राप्त लाभ को दूसरे समूह से होने वाली हानि दूर करने के लिए काम में लिया जाता है. बैंक इसका प्रयोग विभिन्न ग्राहकों से अलग-अलग ब्याज दरों के रूप में करता है.

Duty Drawback शुल्क वापसी

इसका आशय निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के उत्पादन के लिए उपयोग में लाए जाने वाले उपकरणों, उपभोक्ता माल या कलपुर्जों के आयात के लिए दिए गए सीमा शुल्क की वापसी से है. इसमें निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रयुक्त मदों पर दिए गए केंद्रीय उत्पाद शुल्क की वापसी भी शामिल है. शुल्क वापसी की निम्नलिखित दो दरें होती हैं: (क) समस्त उद्योग दरें, (ख) विशेष ब्रांड दरें

Imprest अग्रदाय

फुटकर रोकड़ व्यय को नियंत्रित करने का साधन, जिसमें किसी व्यक्ति को कोई निश्चित राशि (अस्थायी या अग्रदाय) दी जाती है. जब उसका कुछ भाग खर्च कर लिया जाता है तो वह व्यक्ति खर्च की गई राशि के लिए समुचित वाउचर देता है और उसे उस राशि की प्रतिपूर्ति की जाती है ताकि अस्थायी राशि को पूरा किया जा सके. इस प्रकार किसी भी निर्दिष्ट समय पर उस व्यक्ति के पास कुल अस्थायी रकम के बराबर वाउचर या नकदी होनी चाहिए.

Madoff effect मैडोफ-प्रभाव

ऋण-चुकौती में क्रमिक चूक होने की स्थिति को मैडोफ-प्रभाव कहा जाता है. अमेरिकी अर्थव्यवस्था में उथल-पुथल की सूचक संकल्पना. ऐसा कहा जाता है कि मैडोफ नामक अमेरिकी ने लाभ कमाने के लिए उधार का एक पिरामिड खड़ा कर दिया और अंततः उधार की चुकौती न हो पाने पर पूरा पिरामिड ही धराशायी हो गया. मैडोफ ने ऋण का बहुत ही आसान तरीका अपनाया, उसने एक निवेश कंपनी खड़ी कर दी और लोगों को अच्छे प्रतिफल का आश्वासन देकर उनसे उधार लेकर वे पैसे शेयर बाजार में लगा दिए. शेयर बाजार में मंदी आने के बाद उसने एक का ऋण चुकाने के लिए दूसरे से उधार लिया और दूसरे का ऋण चुकाने के लिए तीसरे से और इस तरह से वह एक श्रृंखला बनाता चला गया. अंत में जब उसके पास ऋण चुकाने के लिए पैसे नहीं रह गए तो उसके द्वारा बनाया गया पूरा का पूरा पिरामिड ताश के पत्तों के समान ढह गया.

Pegged prices नियंत्रित कीमतें

मूल्य, पारिश्रमिक या विनिमय-दर को स्थिर या पूर्वनिर्धारित बिंदु या स्तर पर बनाए रखना या तय करना.

Second charge द्वितीय ऋणभार/भार/बंधक

जमानतस्वरूप रखी गई किसी संपत्ति पर दूसरा ऋण लेने के लिए दूसरा ऋण-भार सृजित करना. द्वितीय ऋण-भार-धारक का हक लेनदारों के अनुक्रम में दूसरे क्रम पर आता है. इसकी लेनदारी प्रथम ऋण-भार धारक के अधीन होती है.

Tranche लघु किस्त

किसी किस्त का एक हिस्सा, जहां पर स्वीकृत वित्त की मात्रा बहुत बड़ी हो वहां यह आहरित की गई एक छोटी मात्रा की अभिव्यक्ति करता है. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से प्राप्त उधारों को लघु किस्त (ट्रांकी) कहा जाता है.

Venture capital उद्यम-पूंजी

ऐसी पूंजी, जो वित्तीय संस्थाओं द्वारा जोखिमपूर्ण औद्योगिक और वाणिज्यिक उद्यमों (प्रायः उच्च प्रौद्योगिकी-युक्त) को उनकी स्थापना के प्रारंभ में सहायता के तौर पर दी जाती है.

चित्र बोलता है.

1

कभी जात पात का भेद ना हो ,
हर एक में राष्ट्र का प्रेम भी हो ।
संदेश यही फैलाना है ,
हर घर तिरंगा लहराना है ।

शाकिर अली
शाखा शहडोल–मध्य प्रदेश

2

देशभक्ति में मन हुआ रंग बिरंगा,
शान से लहारायेंगे हमारा झंडा तिरंगा,
आज़ादी के अमृत महोत्सव में मन है तिरंगा,
छूटे ना कोई भी, हो हर घर तिरंगा।

अंशिता वर्मा, अधिकारी
भुज मुख्य शाखा, भुज क्षेत्र
राजकोट अंचल

3

हर घर तिरंगा लहरायेंगे,
आज़ादी का अमृत महोत्सव मिलकर मनायेंगे,
कोई भी घर न छोड़ेंगे,
आकाश को भी तिरंगा कर देंगे।

अभिषेक वर्मा
प्रबंधक, जबलपुर क्षेत्र
भोपाल अंचल

आजादी का ये तिरंगा
घर–घर में है फहरा
इसकी शान निराली है
ये करता देश का पहरा

उत्तम के श्रीवास्तव
वरिष्ठ प्रबंधक
रायबरेली

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 का गिफ्ट कार्ड/राशि दी जा रही है

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत अप्रैल–जून, 2022 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं. पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें. श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/–) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे. पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई–मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 15 दिसंबर, 2022 तक भेज सकते हैं.

कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में वार्षिक राजभाषा समारोह आयोजित

दिनांक 10 अक्तूबर, 2022 को कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई में वार्षिक राजभाषा समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. इस अवसर पर प्रसिद्ध हास्य कवि पद्मश्री सुरेंद्र शर्मा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था. इस कार्यक्रम में बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा, कार्यपालक निदेशक श्री अजय खुराना, श्री जयदीप दत्ता राय समेत कॉर्पोरेट कार्यालय के वरिष्ठ कार्यपालकगण एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे. कार्यक्रम के दौरान हिंदी दिवस 2022 के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए. साथ ही बैंक की मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत मुंबई विश्वविद्यालय तथा एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया.

नराकास (बैंक), वडोदरा 'डिजिटल मुद्रा' विषय पर हिन्दी माध्यम से राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

दिनांक 18 जुलाई, 2022 को नराकास (बैंक), वडोदरा के संयोजन में केवड़िया, गुजरात में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई के अंतर्गत कार्यरत सभी नगर समितियों के लिए डिजिटल मुद्रा विषय पर हिन्दी माध्यम से राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया. इस सेमिनार में नराकास (बैंक), वडोदरा के सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों सहित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई के अंतर्गत कार्यरत नगर समितियों के कुल 85 सदस्यों ने प्रतिभागिता की. कार्यक्रम की अध्यक्षता नराकास (बैंक), वडोदरा के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला ने की. इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, प्रमुख– राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह, अध्यक्ष, नराकास (कार्यालय), जामनगर एवं निदेशक, दीपस्तंभ व दीपपोत निदेशालय, दीपभवन, जामनगर श्री हंसराज बैरवा, उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख, यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, वडोदरा श्री सत्यजीत महांती, महाप्रबंधक (भू.भौ.)– प्रभारी राजभाषा, ओएनजीसी, वडोदरा सुश्री संगीता आर सवनुर एवं अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे. कार्यक्रम के दौरान बैंक की हिन्दी पत्रिका 'अक्षय्यम्', बड़ौदा अंचल की तिमाही पत्रिका 'बड़ौदा दर्पण' का विमोचन किया गया.

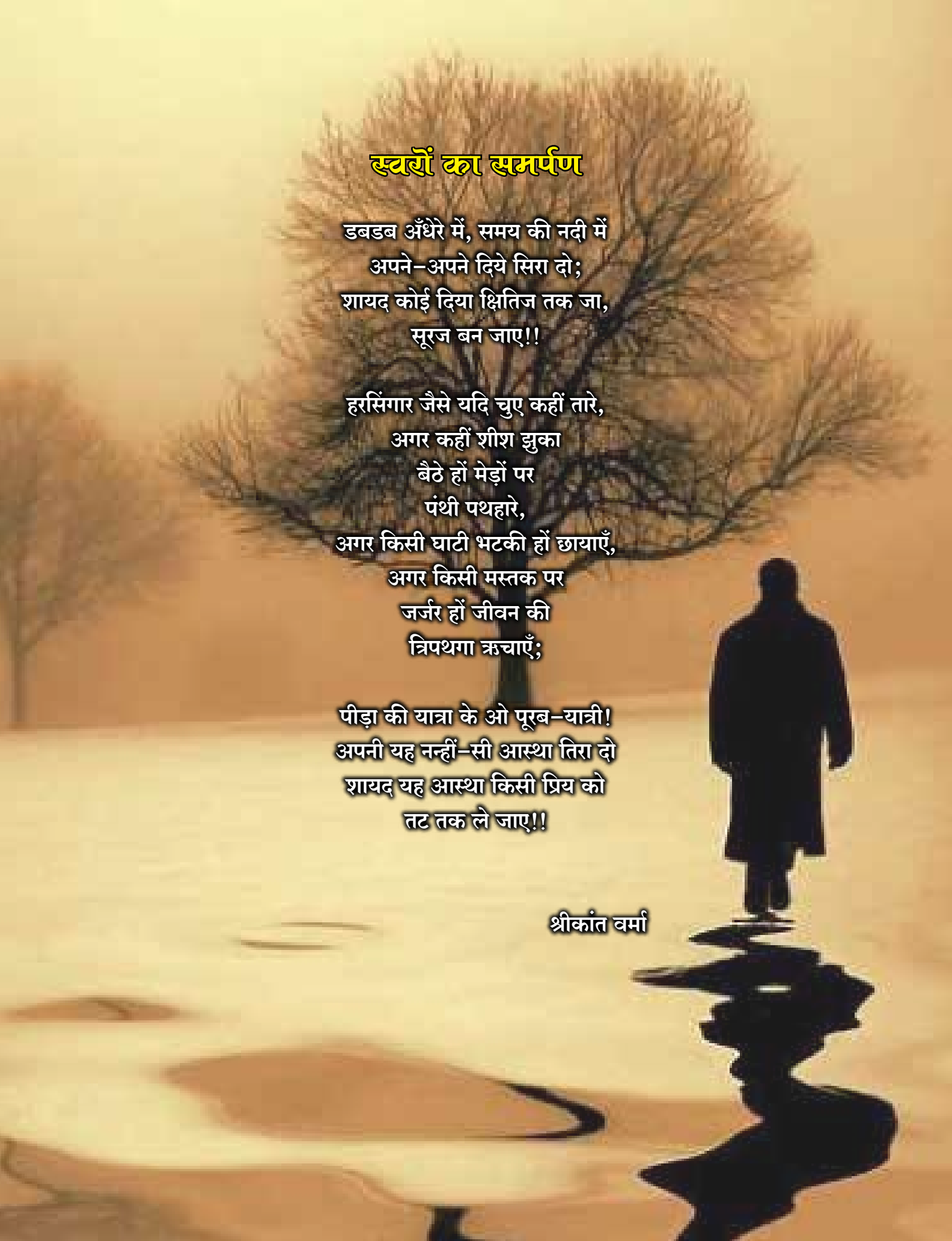

स्वरों का समर्पण

डबडब अँधेरे में, समय की नदी में
अपने–अपने दिये सिरा दो;
शायद कोई दिया क्षितिज तक जा,
सूरज बन जाए!!

हरसिंगार जैसे यदि चुए कहीं तारे,
अगर कहीं शीश झुका
बैठे हों मेड़ों पर
पंथी पथहारे,
अगर किसी घाटी भटकी हों छायाएँ,
अगर किसी मस्तक पर
जर्जर हों जीवन की
त्रिपथगा ऋचाएँ;

पीड़ा की यात्रा के ओ पूरब–यात्री!
अपनी यह नन्हीं–सी आस्था तिरा दो
शायद यह आस्था किसी प्रिय को
तट तक ले जाए!!

श्रीकांत वर्मा